RNI Regd. No. GUJMUL/2016/68324
साल-३, अंक-५, पेईज-३६, मूल्य : रू. २५, दिनांक : १ अक्तुबर- २०१८
Year-3, Issue-5, Page-36, Price : Rs. 25, Date : 01 October - 2018

CRIME FORCE

.... *Always Alert, To Stop The Crime*

सत्यमेव जयते

भारत में हमले के लिए तत्पर... अल-कायदा

अल कायदा का नया आतंकी संगठन 'अलबद्र'

ARE YOU A DESI GUJJU OR A GABRU PUNJABI AT HEART?

We have something for everyone!

FIXED PUNJABI THALI - Rs.199 + Tax • **UNLIMITED GUJARATI THALI** - Rs.240 Inc.Tax

Every noon - 11:30 AM to 3:30 PM

apple Bite®

APPLE BITE HOSPITALITY PVT. LTD.

Four Plus, Sardarnagar Main Road, Astron Chowk, Rajkot - 360001

Ph. : 0281 2480881 | Email : info@applebiterjt.com | www.applebiterjt.com

@applebiterajkot

info@wingsdesign.in

RNI Regd. No. GUJMUL/2016/68324
साल : ३ - अंक : ५
दिनांक : ०१-१०-२०१८
"Crime Force"
(Monthly) Volume-3, Issue-5
01st October - 2018, Page : 36

मालिक-प्रकाशक-मुद्रकश्री
रणजीतसिंह जे. जादव
Mob. : 75750 55111

तंत्रीश्री
विजयभाई बी. साणथरा
Mob. : 75750 55333

सह तंत्रीश्री
सतीषभाई बी. सोलंकी
For Booking And Advertisement
Mob. : 75750 55666

सालाना लवाजम
भारत में : रू ३००/-
विदेश में : रू २०००/-

तंत्री कोलम...

गुजरात के सरकारी स्कूलो में नहीं है प्राथमिक सुविधा, तो कहाँ से पढेगा गुजरात..?

गुजरात में २६० से ज्यादा सरकारी स्कूल किराये के मकान में चलती है ! १४ स्कूले तो बिना मकान के खुल्ले आसमान के तले चलती है ! कई स्कूलो की इमारते जर्जरित अवस्था में है ।

कम्प्ट्रोलर एन्ड ओडीटर जनरल ओफ इन्डिया (कैग) ने गुजरात में शिक्षा के अधिकार की अमलवारी करने के लिए नाराजगी जताई है । कैग ने अपने रिपोर्ट में गुजरात में स्तरीय सुविधाए न होने का दावा किया है । कैग ने यह बातों का भी खंडन किया है कि गुजरात में शिक्षा के स्तर में सुधार आया है । राज्य की सरकारी स्कूलो की मौजूदा हालात बहुत ही दयनीय है ऐसा RTI एक्ट के जरिए जान ने को मिला है और कैग ने भी यह बात की स्वीकृति की है ।

इस के अलावा गुजरात में सरकारी स्कूलो में प्राथमिक शिक्षा की श्रेष्ठता भी पर्याप्त नहीं है । गुजरात सरकार ने RTI एक्ट कि अमलवारी ७ सालों से शुरू की है फिर भी सरकारी स्कूलो में अनिवार्य ऐसी बुनियादी स्तर की सुविधाए उपलब्ध नहीं कर सकी । सरकारी स्कूलो के लिए तय किये गए सरकारी ग्रान्ट की राशि पूरी तरह से उपयोग में न लेने से भी बुनियादी सुविधा का फायदा ऐसी सरकारी स्कूलो के विधार्थीयों को नहीं मिल पा रहा है ।

सरकारी स्कूलो में विधार्थी पढने के लिए आए इस के लिए सरकार को सकारात्मक सोच के साथ कई कदम उठाने पडेंगे ।

अगर ऐसे ही हालात रहेगें तो सरकारी प्राथमिक स्कूलो की ऐसी दयनीय हालात में कैसे पढेगा गुजरात ? यह भी एक सवाल है ।

मुख्य कार्यालय :
राज कोम्प्लेक्ष,
स्टार प्लाझा के सामने,
फुलछाब चौक, राजकोट - ३६० ००१
E-mail : crimeforce9@gmail.com

दिल्ही ब्युरो ओफिस
सुभाषभाई अग्रवाल
Mo. 093122 87276
2463/64,
नवाब बिल्डींग,
जी.बी. रोड,
दिल्ही-110006

मुंबई ब्युरो ओफिस
असित वी. सोनी
Mo. 075060 70805
B/16, शांति केम्पस,
स्नेहा रेस्टोरेन्ट के पास,
नाहुर रोड, मुलुंड (वेस्ट)
मुंबई-400080

गांधीनगर ब्युरो ओफिस
ईश्वरलाल के. पटेल
Mo. 094278 01647
प्लोट नं. 317,
जी.अेच.-6 कोर्नर,
सेक्टर 29,
गांधीनगर-382030

सुरत ब्युरो ओफिस
मनीष लुंभानी
Mo. 099255 55711
311-इन्द्रप्रस्थ कोम्प्लेक्ष,
सुमुल डेइरी रोड,
कतारगाम,
सुरत-395004

CRIME FORCE HELPLINE No. : 075750 55222

CRIME FORCE
सत्यमेव जयते

अनुक्रमणिका...

राजकीय...	05
ईन्टरनेशनल क्राइम स्टोरी...	07
नजरीयाँ बदलें...	11
कवर स्टोरी...	13
महाराष्ट्र पुलिस स्पेश्यल...	16
गुजरात पुलिस स्पेश्यल...	18
चुनाव विषयक...	20
प्रशंसनीय...	22
लाल बत्ती...	24
संस्था परिचय...	26
आरोग्य विषयक...	28
डोंगरी से दुबई तक...	30

२०१९ के लोकसभा चुनाव : मोदी की लोकप्रियता में कमी आने से ५० से ६० बेठको में कटौती होगी..!!

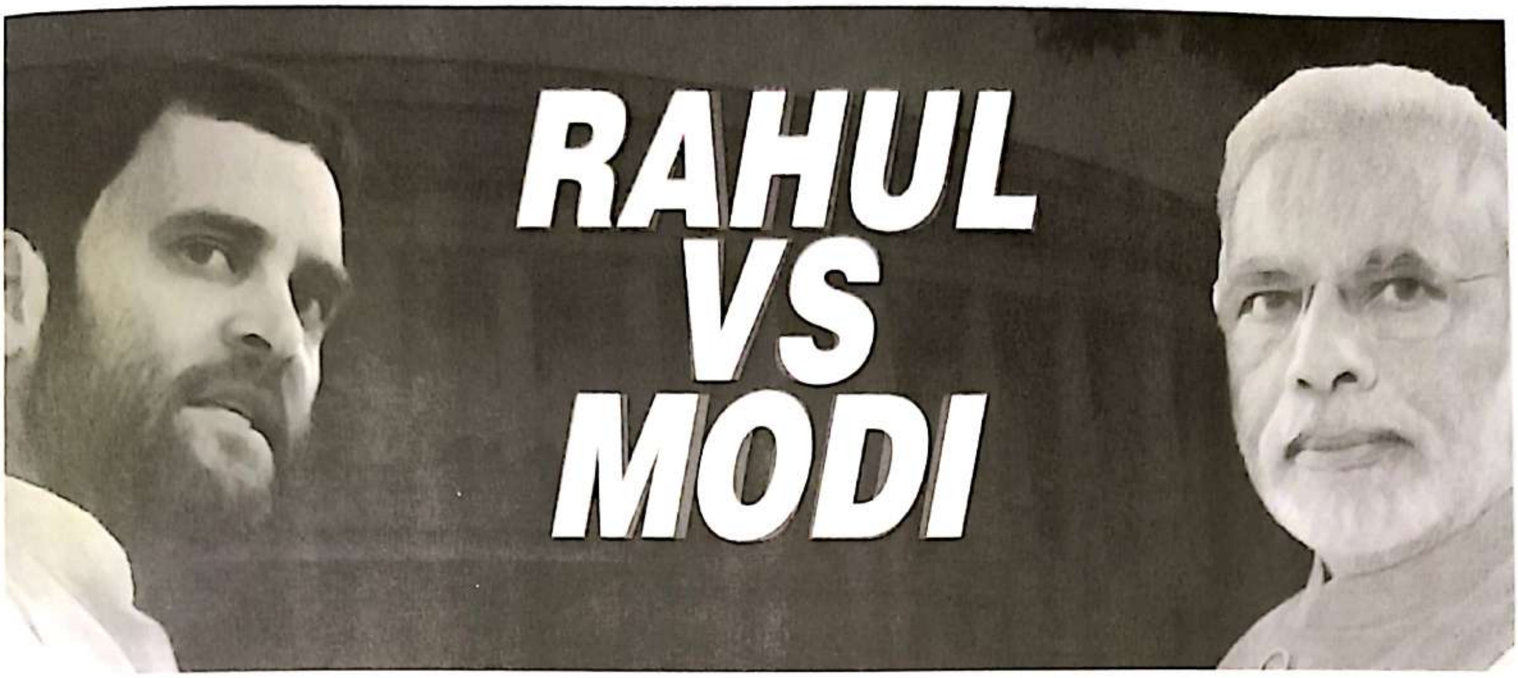

राजकीय...

– रणजीतसिंह जादव

चुनाव के मौसम शुरू हो गये है । २०१९ के लोकसभा चुनाव में किसको जीत मिलेगी और किसको हार मिलेगी ? उसके बारे में ओपिनियन पोल की खबरे प्रसारीत होने लगी है । देश के हर चौराहे और गलीयों में एक ही चर्चा चल रही है की क्या मोदी फिर से वडाप्रधान बन पायेंगे ? फाइव स्टार होटेल में मिटींग हो या गाँव के चौराहे पे इकट्ठे हुए लोग हो सभी के बीच में एक ही इन्सान "नरेन्द्र मोदी" की बाते होती है । इतना ही नही हेर कटींग सलून में भी बाल काटने वाले और बाल कटवाने वाले के बीच भी यही चर्चा चलती है कि क्या नरेन्द्र मोदी फिर से वडाप्रधान बनेंगे ? यह सबका जवाब एक ही है जो महा गठबंधन के लोग है वो भी जान ले... नरेन्द्र मोदी फिर से वडाप्रधान बनेंगे यह निश्चित है । २०१४ के चुनाव जंग में अनेक वायदे किए थे वो पूरे नही हो शके यह जानने के बाद भी लोगों ने २०१९ के चुनााव में मोदी को वडाप्रधान पद के लिए फिर से चुनने का मन बना लिया है । लोगो को इतना मालूम है की देश के बहुत ही बिगडे हुए वहीवटीतंत्र को सुधारने के लिए मोदी को दूसरे पांच साल के लिए मौका मिलना चाहिए । मोदी जिस तरीके से अपने विचार को अमल करने के लिए सोच रहे है उसके लिए उनको दूसरे पांच साल का समय देना चाहिए ।

सरकार के चार साल के शासन में मोदी की लोकप्रियता में कमी आई है यह सहज है । इसके बावजूद भी विपक्ष के कोई भी नेता और वडाप्रधान के लिए अपने आपको प्रोजेक्ट करने वालो से मोदी की लोकप्रियता कई गुना ज्यादा है यह लोगो को मानना पडेगा । हर एक चुनाव में ओपिनियन पोल दिखाने वाले बरसात में मेंढक की तरह निकल आते है । लेकिन मोदी की लोकप्रियता के आगे वो लोग भी कुछ ज्यादा बोल नही सकते । यहाँ यह भी हकीकत है की कोंग्रेस के प्रमुख राहुल गांधी भी मोदी की लोकप्रियता से बहुत ज्यादा पिछे है । कोई चमत्कार ही राहुल गांधी की लोकप्रियता मोदी जीतनी बढा

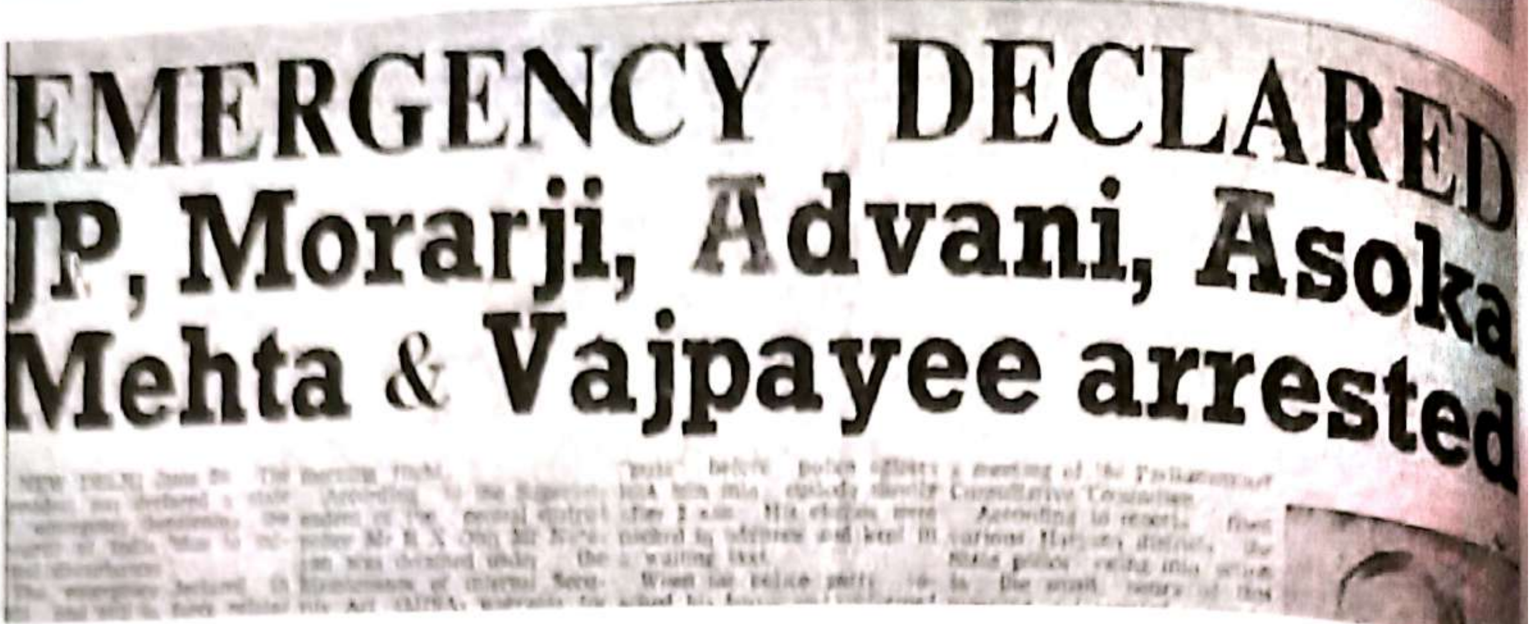

सकता है।

मोदी का फिर से वडाप्रधान बनने के लिए दो मुद्दे स्पष्ट है। एक तो यह की मिलीजुली सरकार से भारत की जनता को नफरत है। १९८० में इन्दिरा गांधी ने लोकतंत्र के लिए कलंक समान कटोकटी डाली फिर भी वो जीत गए थे क्योंकि जनता पार्टी के नेता आपस में लड रहे थे जो आम जनता को पसंद नही था। जो के मोरारजी देसाइ एक अपवाद थे के जिसने मिलीजुली सरकार तटस्थ रूप से चलाई थी।

दूसरा महत्वपुर्ण कारण यह हे की हमारे यहाँ लोकसभा के चुनाव भी ऐसे तरीके से लडा जा रहा हे की जैसे प्रमुख चुनने का हो। लोग वडाप्रधान चुनने का पसंद करते हे, नही के पक्ष को। लोग यह नही देखते की उनका स्थानिक सांसद कौन है, वो यह देखने के बदले उनका वडाप्रधान कौन है यह बात पर ध्यान देते है। लोग भी विधानसभा और लोकसभा के चुनाव के उमेदवार के बारे में समजने लगे है।

जैसे के लोकसभा से पहले होने वाले विधानसभा के चुनाव में भी अगर भाजपा का प्रदर्शन कंगाल देखने को मिले तो भी २०१९ के लोकसभा के चुनाव जंग मे मोदी का बाल भी बांका होने वाला नही है। क्योंकि मतदाता अलग विचार के साथ मतदान करते है। पिछले दिनो में आए एक साप्ताहिक मेगेझीन के पोल की माने तो भाजपा कई बेठके गवाँने वाली है। भाजपा यु.पी., राजस्थान, मध्यप्रदेश में क्लिन स्विप करेंगे यह संभव नही है। यह बात समजी जाती हे क्योंकि यह सामान्य ज्ञान की बात है। इसलिए ऐसा लगता है की २०१९ के लोकसभा के चुनाव में भाजपा को ५० से ६० बेठको का फटका लग सकता है।

२०१४ में केन्द्र मे आए नरेन्द्र मोदी की सरकार ने कई वायदे कीए थे। इस मे से ज्यादातर वायदे पूरे नही हो सके है। लेकिन उसने अपने ४ साल के शासन में कई ऐतिहासीक निर्णय भी लिए है। मोदी की लगातार काम करने की ताकत आज विपक्ष के नेताओ और लोगों को अचंबित कर देती है। उनका काम करने का शेडयुल देखेंगे तो मालूम पडता हे इतने घंटे काम करने वाले कोई वडाप्रधान हमारे देश ने मोदी के सीवा कभी नहीं देखा है। ❖

दूसरा महत्वपुर्ण कारण यह हे की हमारे यहाँ लोकसभा के चुनाव भी ऐसे तरीके से लडा जा रहा हे की जैसे प्रमुख चुनने का हो। लोग वडाप्रधान चुनने का पसंद करते हे, नही के पक्ष को। लोग यह नही देखते की उनका स्थानिक सांसद कौन है, वो यह देखने के बदले उनका वडाप्रधान कौन है यह बात पर ध्यान देते है।

खतरनाक गोडफाधर ओफ ड्रग वर्ल्ड :
जोकिन गझमान लोएरा

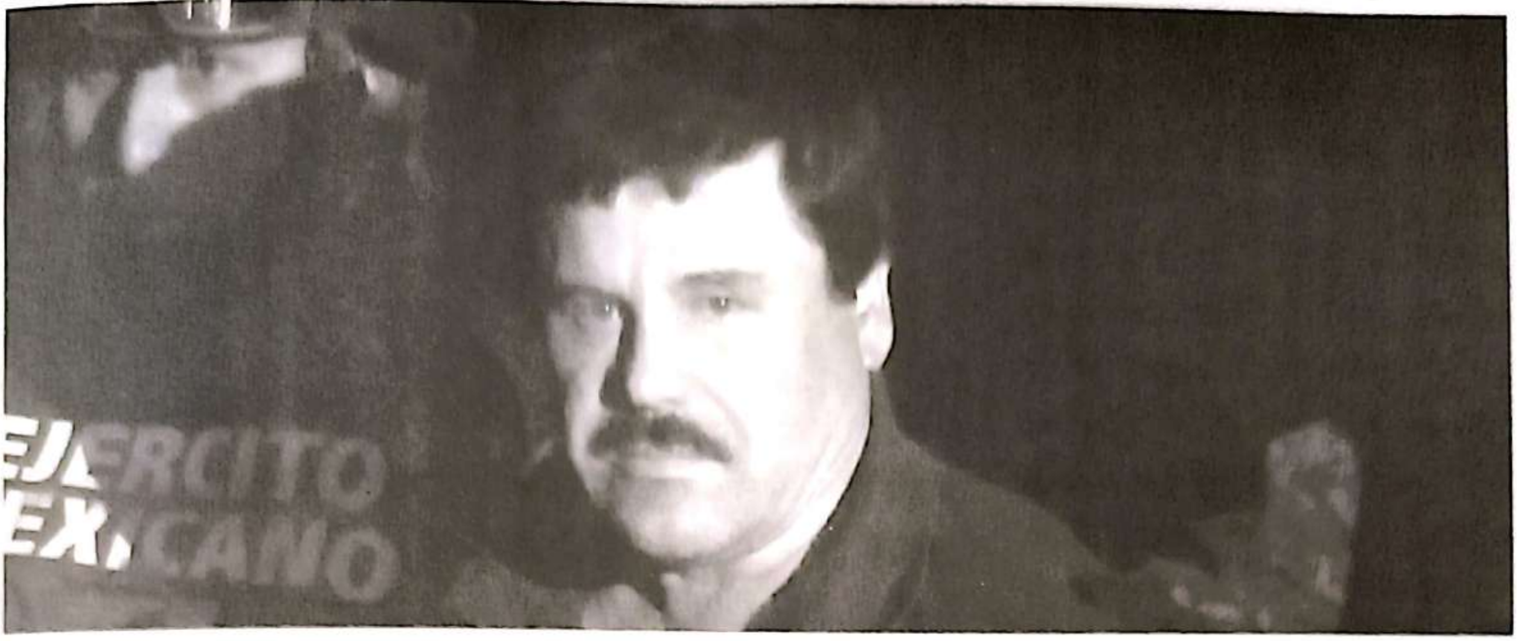

ईन्टरनेशनल क्राइम स्टोरी...
- विजय साणथरा

हमारे समाज के चोतरफ गुनेहगारो का जमेला देखने को मिलता है । अलग अलग अपराध के लिए अलग अलग व्यकितयों की गेंग देखने को मिलती है और हर एक गेंग का एक लीडर होता है । वो अपने गेंग का नेतृत्व करते हुए पूरी गेंग संभालता है । उसका हुक्म गेंग के सभी सदस्यों को मानना पडता है । ऐसे गेंग लीडर हमारे देशमे "भाइ " के नाम से जाने जाते है । अपनी ऐसी अपराधिक प्रवृति सीर्फ अपने समाज या अपने देश तक सिमीत नही रखते हुए पूरी दुनिया मे अपना ऐसा गेरकानूनी रूप से धंधा चलाने वाले ऐसे गेंग लीडर को "माफिया" के नाम से जाना जाता है । जैसे कि जमीन के संबंधीत अपराधिक प्रवृतियाँ करनेवालो को "भू–माफिया " के नाम से जाना जाता है ।

वैसे तो "माफिया " शब्द दुनिया में प्रचलित हुआ इटली से । इटली में ड्रग्स का गेरकानूनी कारोबार बहुत ही फैला हुआ था । वहाँ इस काले धंधे मे काम करने वाले लीडर को "ड्रग्स माफिया " कहते थे ।

आज हम बात करेंगे दुनिया के ऐसे ही एक अमेरीकन खतरनाक ड्रग्स माफिया नं १ जोकिन गझमान लोएरा की । गझमान अमेरीका के मेक्सिको का रहने वाला है । गझमान के पिता भैंसो के तबेले की रखवाली करते थे । उसके दादा बड़े जमीनदारो की जमीन में खेत मजदूरी का काम करते थे । गझमान एक अलग ही मिजाज का इन्सान था । पिछले २० सालों से गझमान "गोडफाधर ओफ ड्रग्स ओफ वर्ल्ड" से पहेचाना जाता था । वो सिर्फ दूसरी क्लास तक ही पढा था । मेक्सिको, कोलंबिया और अमेरीका जैसे सीर्फ तीन देशो में घुमने वाले गझमान पर शुरुआत में अमेरीकी पुलिस ने ५० लाख डोलर का इनाम जारी कीया था । बाद में यह इनाम को ५ करोड डोलर्स याने की ३०० करोड रूपए तक बढाया गया था ।

अमेरीका के मोस्ट वोन्टेड लिस्ट मे वो तेराह सालसे टोच पे था ।

सिर्फ १५ साल की उम्र में गझमान ने मेक्सिको में अफीन की खेती करना शुरू कीया था और ५ साल में २० साल की उम्र में देखते ही देखते उसने पूरे मेक्सिको का अफीन की खेती का कारोबार अपने कब्जे में ले लीया था ।

पूरी दुनिया में गझमान का नेटवर्क इतनी हद तक फैला हुआ था कि ब्राउनशुगर के काला पाउडर के नाम से जाना जाता चरस को पूरी दूनिया में कोई भी देश में कोई भी जगह पर कोइभी इन्सान सेवन करे तो गझमान की जेब में ड्रग्स की किंमत की कुछ रकम जमा हो जाती थी ।

ड्रग्स के कारोबार को गझमान ने कोर्पोरेट स्वरूप देकर उसे पूरी दूनिया में फैलाया था उसने अपनी शूरूआत मेक्सिको और आर्जेन्टिना में ड्रग्स पेडलर (ड्रग्स को पहुँचाने वाला) के रूप में की थी । आहिस्ता आहिस्ता उसने पेशावर पेडलर रखे लेकिन बाद में उसने कुछ खास विस्तारो का ड्रग्स बेचने का काम बंदूक की नोक पर अपने हाथो में ले लिया था । उसमें अपना पैर बराबर जड़ देने के बाद उसने ड्रग्स का उत्पादन चालू कीया ।

लेकिन समय बितने पर उसको एहसास हुआ कि असली मुनाफा ड्रग्स बेचने में ही है ।

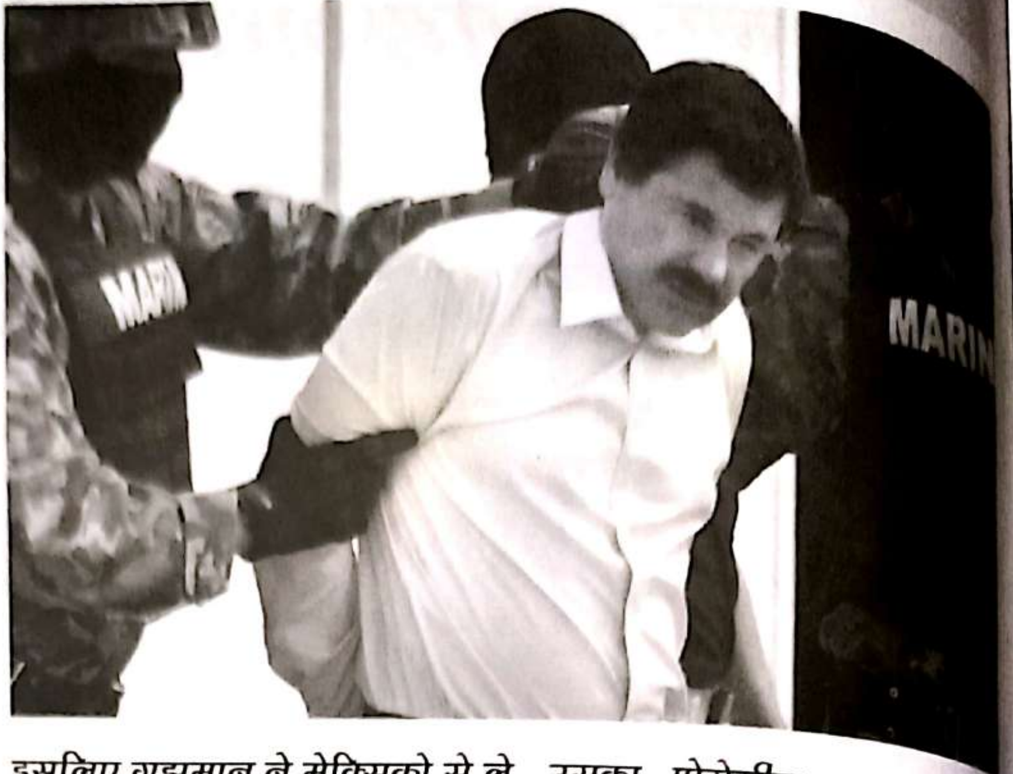

इसलिए गझमान ने मेक्सिको से ले के क्युबा जैसे लेटीन अमेरीकन देशो के अलावा आफ्रिका महाद्विप के दूसरे अनेक देशो में अफीन की खेती शुरू कर दी । , नाइजेरीया, बोत्स्वाना, चाडा, जैसे सभी देशो में हमेंशा राजकीय अस्थिरता, अराजकता और अफड़ा तफड़ी मची रहती है । गझमान ने इस परिस्थितियों का भरपूर फायदा उठाया और ऐसे देशो के बदमाश गेंगो के साथ धंधादारी सौदा किया और वहाँ की लाखो हेकटर जमीन पर अफीन की खेती शुरू करवा दी और उन देशो में से कई देशो की हालत इतनी बिगड गई की दश बारह सालो में अधिकतम देशो का अर्थतंत्र और रोजगारी ही गझमान के हाथो में आ गए थे ।

गझमान दूर दूर के देशो में अफीन की खेती करके उधर ही उसका प्रोसेसींग करके बड़े-बड़े जहाँज भर के कोलंबिया के समुद्र तट पर पहुंचाता था । माना जाता है की कोलंबिया में उसका २५० से भी ज्यादा गोदाम हुआ करते थे और गझमान इस गोदामो से ही अमेरीका समेत पूरी दूनिया में अफीन, हशीश, ब्राउन सुगर पहुंचाता था । यह पूरे कारोबार को उसने आबाद मोडेल बना दीया था । उत्पादक, प्रोसेशर, माल वहन करने वाले, माल का संग्रह करने वाले, थोकबंध माल मंगवाने वाले और छूटक बिक्री करने वाले सभी को मुनाफा हो ऐसा मोडेल बनाकर और सबके उपर अपना वर्चस्व रहे ऐसी मजबूत व्यवस्था उसने की थी ।

जिन देशो में गझमान का कारोबार होता था वहाँ उसकी गजब की पक्कड रहती थी । उन देशो की सरकार उसके घूटने पर गीरती थी ।

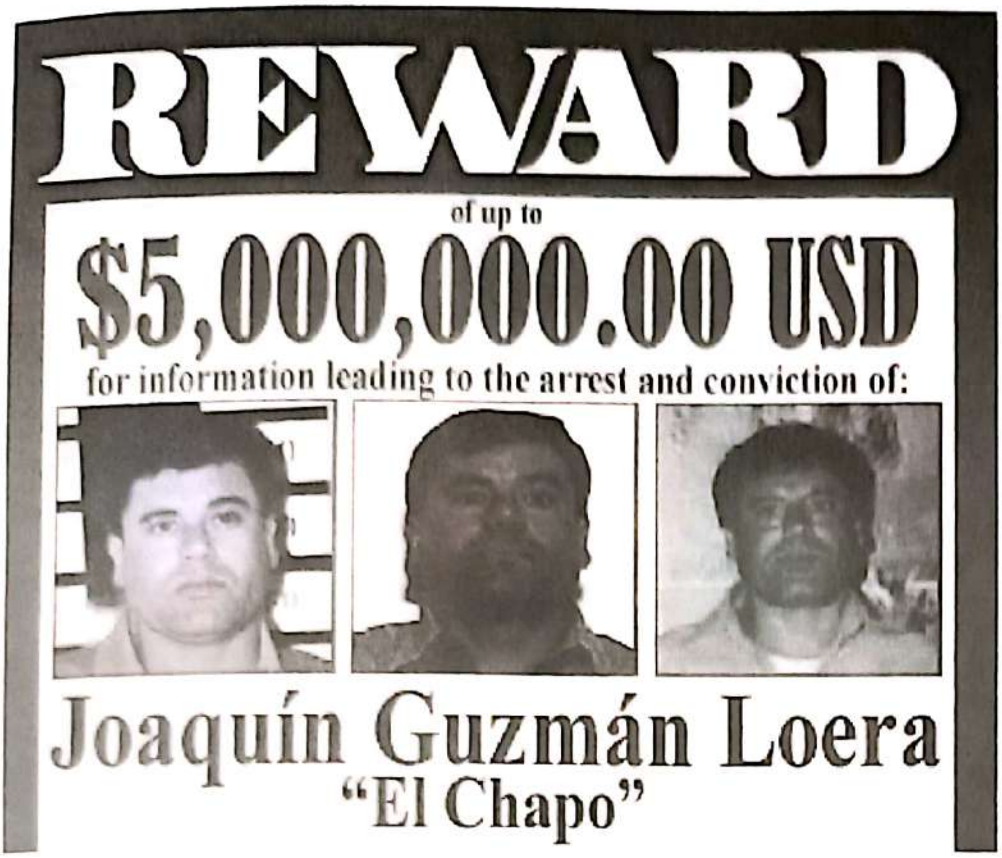

मेक्सिको, कोलंबिया के अलावा क्युबा, ब्राझिल और आर्जेन्टिना के सरकारी तंत्र ज्यादातर गझमान के ड्रग्स के कारोबार पर निर्भर रहते थे । अमेरीका के खुफिया विभाग की रीपोर्ट में साफ लिखा है कि गझमान के पैसे से ही दुनिया की आठ–दश देशो की सरकार चलती है । उसके बदले में ऐसे देश अपने ही देश में गझमान के ड्रग्स का उत्पादन बिना रोक टोक करने देते है ।

आज ऐसी परिस्थिति हैं की पूरी दुनिया में ड्रग्स की हेर फेर पर गझमान का सीधा या परोक्ष अंकुश है । गझमान का खौफ और ड्रग्स के कारोबार पे नियंत्रण गजब का था ।

एक समय पर पैसे की तंगी महसूस करने वाले अलकायदा ने भी लादेन की मौजूदगी में ही अफघानिस्तान से चीन गझमान के लिए ड्रग्स ट्राफीकीग कीया था उसके सबूत अमेरीका के पास है ।

सौराष्ट्र–गुजरात के कोई भी शहेर के बदनाम महोल्ले में चरश खरीद के उसका सेवन करने वालो को यह पता नही होता की यह चरश अलकायदा की निगरानी मे लश्करे तोयबा, जैशे महमद जैसे आतंकी जूथो के जरीए अफघानिस्तान, वझिरीस्तान और कश्मीर से हो के उसके पास पहुँचता है और उसका असल उत्पादक जोकिन गझमान लोएरा हो सकता है ।

आंतरराष्ट्रीय ड्रग्स बाजार में ड्रग्स के दाम में कटौती या बढोतरी गझमान के नियंत्रण में ही होता था । दुनिया के कौन से हिस्से में और कितने दाम से ड्रग्स भेजना है वह गझमान ही तय करता था । उसका सिधा मतलब यही निकलता है की कौन से देश को कितना तबाह करना है उसका अधिकार यह सिर्फ एक ही आदमी के हाथ मे था ।

आप मानेंगे नही किन्तु यह सच है कि अरबो डोलर के मालिक गझमान अपनी खुद की समांतर सरकार चलाता था इतना ही नही बल्कि गझमान की खुद की समांतर सेना भी थी ।

८० के दशक के कुख्यात ड्रग्स माफिया पाब्लो एस्कोबार को वो अपना रोल मोडेल मानता था । गझमान की इतनी ख्याति थी फिर भी अमेरीका जैसे देश सहित दुनिया के अनेक देशो की लगातार खोजबीन करने के बाद भी १३–१३ सालो से वो किसी की गिरफ्त में नहीं आया था । उसको गिरफ्तार करने के लिए दुनिया के १७ देशो ने पिछले दो दशक से संयुक्त सेना का निमार्ण किया था । गझमान को गिरफ्तार करने के लिए संयुक्त सेनाने ३३ बार ओपरेशन हाथ धरा था ।

गझमान का खौफ और बुध्धि के आगे लादेन की कोई औकात नही थी ।

गझमान के ड्रग्स कारोबार

का वार्षिक टर्न ओवर १४५०० करोड रूपए का था । यह कारोबार से अप्रत्यक्ष रूप से १,६०,००० लोगो को रोजी-रोटी मिलती थी । एक आधिकृत रीपोर्ट के मुताबिक २००५ की साल मे गझमान की संपत्ति ६.५ मिलियन डोलर याने की ४,००० करोड रूपए की थी । उसके कारोबार की सूझ-बूझ कि बात करे तो वो मार्क झुकरबर्ग या बिल गेट्स की बराबरी करता था ।

आप नही मानेंगे लेकिन सच यह है कि जग विख्यात फोर्ब्स मेगेझीन की दुनिया के सबसे धनिक लोगो की यादी में गझमान लगातार ८ साल तक आता रहा था ।

पूरी दूनिया में वो इतना नामचिन होने के बाद भी गझमान सिर्फ एक ही बार गिरफ्तार हुआ था और अमेरीका ने उसको कुख्यात ग्वाटेमाल की जेल में बंद कर दीया था । उसके उपर त्वरित तरीके से ८७ केस बना दिए थे । गझमान कोई कानूनी तरकीब का फायदा उठाके वहाँ से निकल ना जाए इसलिए अमेरीका ने अपने पास इकट्ठे सबूतो के दम पर ६ केसो मे अदालत में त्वरीत काम चलाके उसको २० साल की सजा सुना दी थी । इसके अलावा दूसरे केसो की कारवाई चलती रही थी । यह सब देखते हुए तो ऐसा लगता था की अब गझमान का "थी एन्ड" हो जाएगा ।

लेकिन गझमान बहूत ही शातिर दिमाग वाला था । मेक्सिको में उसने जो अपराध किये थे उसके लिए उसे ग्वाटेमाल से मेक्सिको लाया जा रहा था तब उसने अपना करतब दिखाना चालू कर दिया, जेल के सुरक्षा कर्मीओ को उसने बहुत बड़ी रकम की रिश्वत देकर उन लोगो को अपने विश्वास मे लेकर उन्ही की ही मदद से केदीयों के कपडे धोने ले जाने वाली वेन में

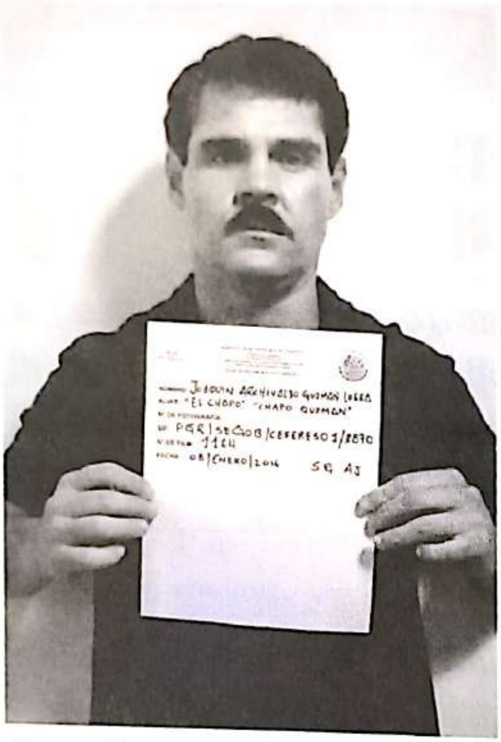

वो कपड़े के गंज के नीचे छूपकर रफूचक्कर हो गया था और पिछले १३ सालो से वो लापता था ।

देखने वाली बात तो यह थी कि इतने सारे देश की पुलिस और संयुक्त सेना ढुंढती हो और बार-बार ओपरेशन हाथ धरने से भी जो आदमी गिरफ्तार ना हो शके वो खतरनाक और बेहद ताकतवर गझमान मेक्सिको के एक बदनाम मोहल्ले में से एक छोटी सी बदनाम होटेल में से गिरफ्तार हुआ । जिसको गिरफ्तार करने के लिए पूरी फौज तैयार थी और इसको पकडने के लिए बंदूक की एक गोली भी न छोडनी पडी यह अजीब लगता है ।

गझमान की यह गिरफ्तारी को देख के ऐसा लगता है कि उसने ऊपर गिरफ्तारी का दबाव जो इतना बढ गया था उसको कम करने के लिए कोई बडी सौदाबाजी करके वो अपने आप गिरफ्तार हुआ है । क्योंकि गझमान जैसे बेहद ताकतवर और शातीर दिमाग का इन्सान जो १३-१३ साल से सेना की कई बार रेड पडने के बाद भी गिरफ्तार नही हुआ वो ऐसे आसानी से कैसे पकड में आ सकता है । यह बात किसी के भी दिमाग में बेठती नही है ।

मे-२०१८ में गझमान के लोयर अे. अेडपुर्डो बसेरेझो ने जज ब्रायन अेम. रोगन को अपील की थी की गझमान की जान को यहाँ पे खतरा है इसलिए उसका केस ब्रुकलीन की जगह फेडरल कोर्ट हाउस, मेनहट्टन में ट्रान्सफर किया जाए क्योंकि यहाँ गझमान की जिंदगी की सलामती नही है ।

देखते हे आगे क्या होता है, क्या गझमान कभी वहाँ से भाग निकलने की कोई नई तरकीब आजमाता है ? लेकिन अभी तो वो जेल की काल-कोठरी में बंध है । ❖

क्राइम शो सिर्फ एन्टरटेइनमेन्ट नही, अवेरनेश शो भी है ।

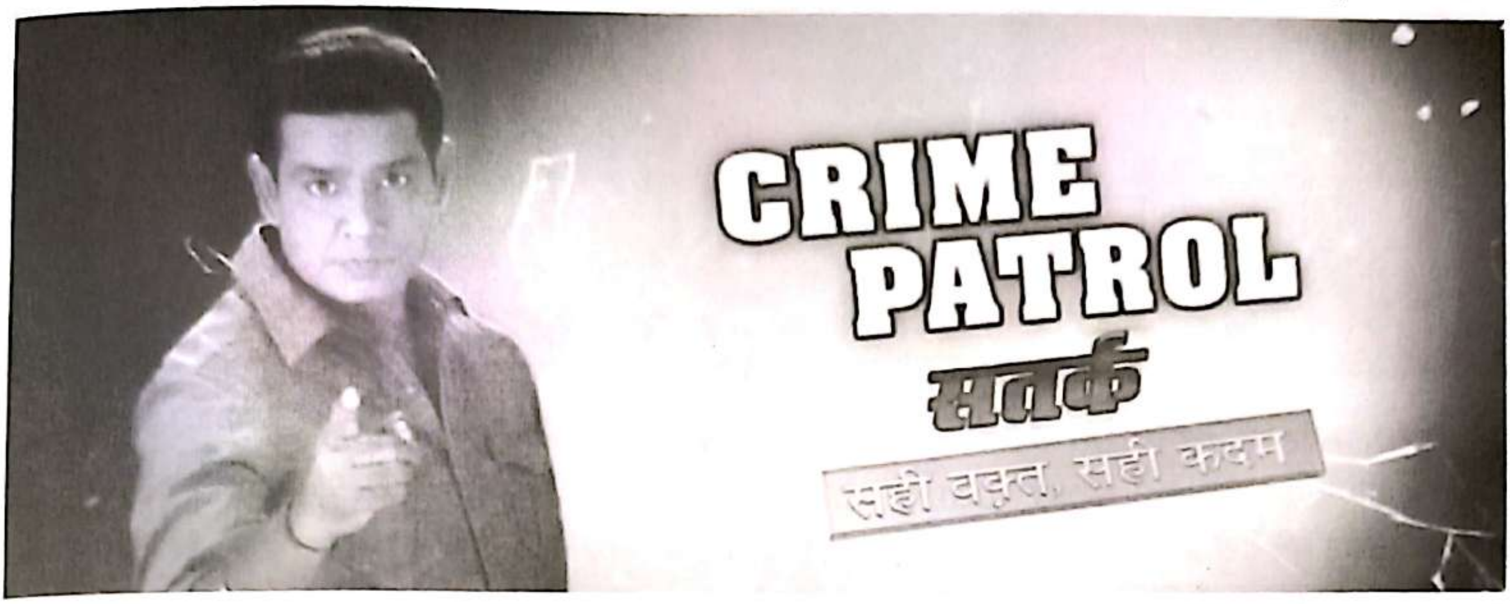

नजरीयाँ बदलें...

– सतीष सोलंकी

हमारे यहाँ टी.वी. में सामाजिक सीरयले, कोमेडी सीरयले, रियालीटी शो, रसोई शो, क्राइम शो जैसे विविध प्रकार के शो लगातार प्रसारीत होते है । हर एक टी.वी. चेनल की कुछ खास सीरयल मे मास्टरी होती है । ऐसी सीरयले या शो से उस चेनल की टी.आर.पी. में बढोतरी या कटौती होती है ।

सोनी टी.वी. पर प्रसारीत होनेवाले एन्काउन्टर क्राइम शो बहुत ही लोकप्रिय हुआ था । सावधान इन्डीया, क्राइम पेट्रोल, सी.आइ.डी. जैसे क्राइम शो से हमारे समाज पे सकारात्मक और नकारात्मक असर देखने को मिलती है ।

क्राइम शो की सबसे पहले शुरुआत अमेरीकाने की थी । इस बारे में अमेरीकन होम मिनिस्ट्री का कहना है कि वहाँ क्राइम शो के शुरु होने के बाद थोडे समय में ही कुछ तरह के अपराधो मे बहोत कटौती देखने को मिली थी । हम अगर न्युझीलेन्ड की बात करे तो वहाँ एक क्राइम शो के चलते हुए एक समय पे वहाँ क्राइम रेट "०" लेवल पे आ गया था । अब उधर क्राइम शो चलते नही है इसलिए उसको बंद करना पडा । ओस्ट्रेलिया में भी क्राइम शो के चलते क्राइम रेट कम हुआ था । हमारे देश की बात करे तो इधर भी कुछ प्रकार के क्राइम में कमी आई है ।

टी.वी. पर से प्रसारीत होनेवाले क्राइम शो को कुछ संस्थाये नकारात्मक तरीके से देखती है । हकीकत मे ऐसे क्राइम शो को ऐसे नजरीये से देखने की जरुरत नही है । क्राइम शो शुरु करने का आशय यह था कि समाज को सच्ची बातो की जानकारी मीले । अपराध के रास्ते पर चलते हुए अपराधी को अंत में सजा जरुर मिलती है । इसलिए ऐसी अपराधिक प्रवृतियाँ मत करो ऐसा समजाने का प्रयास ऐसे क्राइम शो के द्वारा किया जाता है । यह सब देखते हुए अपराध के रास्तो पर जाने वाले अपराधियों का दिमाग सही रास्ते

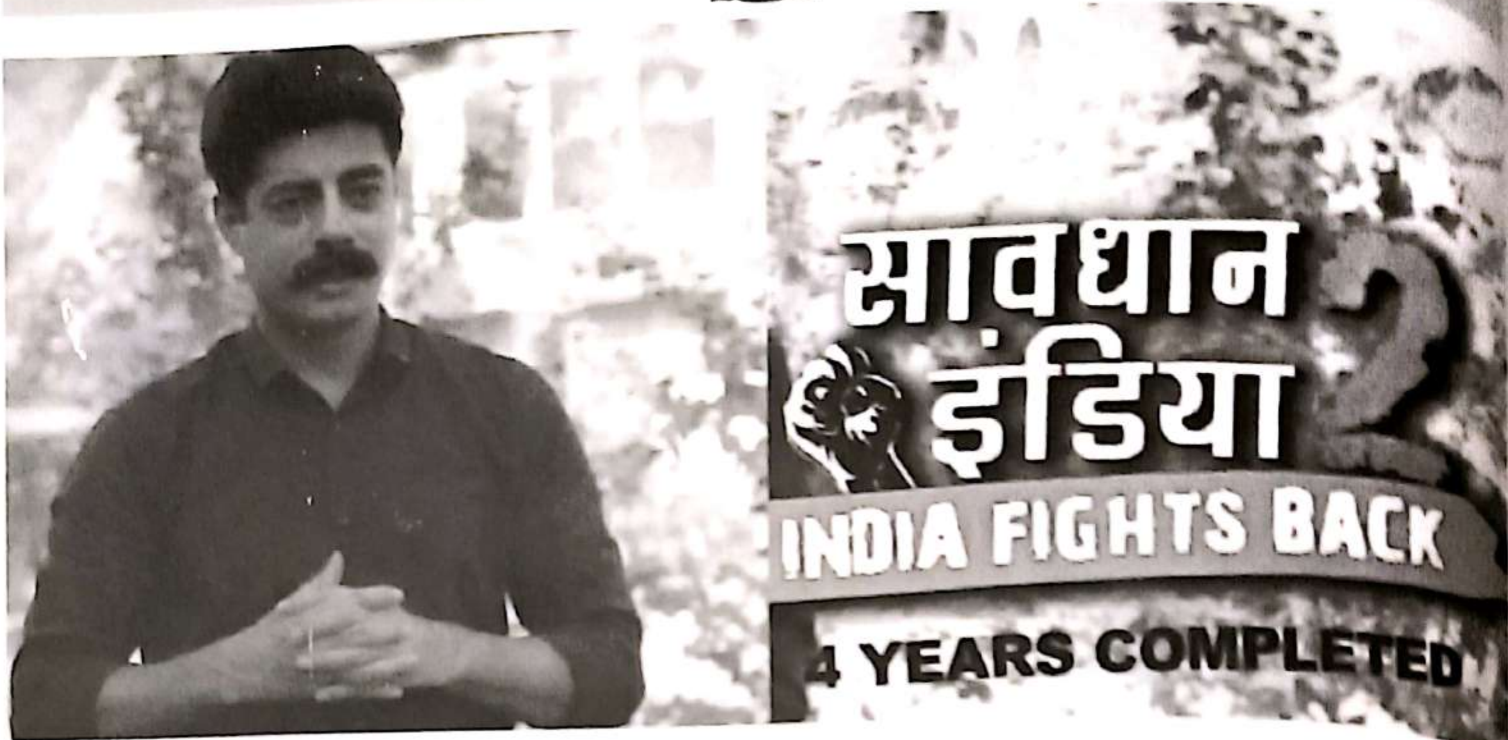

पर आ जाए और वह ऐसे अपराध के रास्ते आगे न बढे । लेकिन समाज के कुछ लोगो को ऐसे क्राइम शो के बारे में ऐसी शिकायत है कि ऐसा शो देखने के बाद लोगो के मानस विकृत हो जाते है और ऐसे लोगो को क्राइम करने के नए-नए तर्क ऐसे शो से मिलते है । और ऐसे क्राइम शो देखने के बाद उसको ऐसा भी लगता है की क्राइम करने के बाद वो कभी पकड़े नहीं जाएंगे । लेकिन असल में ऐसा नही है कि क्राइम शो क्राइम करने को लोगो को उक्साते है और अपराधी क्राइम करने के बाद कभी भी नही पकड़े जाएंगे ।

क्राइम शो पूरा होने के बाद उसमें बताया जाता है की गुनहगार कितना भी चालाक क्युँ न हो अंत मे तो पकड़ा ही जाता है और गलत काम करने वालो को कानून के द्वारा जरूर सजा भूगतनी पड़ती है ।

दूसरी तरफ कई किस्सो में ऐसा भी देखने को मिलता है कि ऐसे क्राइम शो देखने के बाद कुछ गलत काम करने वालो को गलत संदेश मिलता हे और क्राइम शो में दिखाई गई स्टोरी के मुताबिक क्राइम किया हो । लेकिन ऐसे किस्से ज्यादा कर के २ या ३ % ही देखने को मिलता है । लेकिन उसके सामने ऐसे क्राइम शो देखने के बाद गलत करने वालो में डर बेठ जाता है और वो लोग ऐसा क्राइम करने से डरने लगे इसका रेशियो २५ से ३० % तक देखने को मिलते है । यह सब देखते हुए हम ऐसा कह सकते है कि ऐसे क्राइम शो के चलते हुए हमारे देश में क्राइम रेट में गिरावट आ रही है । परंतु यह कभी बाहर नही आया ।

क्राइम शो को एन्टरटेइनमेन्ट के बदले अवेरनेश शो के रूप में देखने से निश्चीतरुप से फर्क दिखेगा और ऐसे शो को देखने का लोगो का नजरीया भी बदल जाएगा । हमारे देश में कई क्राइम शो चलते है और इस की सीधी असर देखने को मिलती है की कॉलेजीसमें रेगिंग का रेशियो कम हो गया है और घरेलू हिंसा में भी ऐसे शो से कमी आई है । अभी तो ऐसे शो की सकारात्मक असर मेट्रो और सेमी मेट्रो सीटी तक ही सिमीत है लेकिन जल्द ही आनेवाले समय में उसकी असर छोटे शहर और ग्रामीण इलाके में भी देखने को मिलेगी ।

हमे आशा है की ऐसे क्राइम शो का मकसद लोग समझे और अवेरनेश दिखाये ऐसा करने से ऐसे क्राइम शो समाज सुधार का काम कर सकते है...।

जय हिन्द...

भारत में हमले के लिए तत्पर है अल-कायदा

पूरी दुनिया आज आतंकवाद की समस्या से चिंतीत है । आतंकवाद की यह गंभीर समस्या को नियंत्रण मे लेने के लिए दुनिया के कई देशो ने हाथ मिलाया है और सब ने साथ मिल के यह समस्या को खत्म करने की ठानी है । लेकिन यह एक ऐसी भयानक और खतरनाक समस्या है जो जल्दी से नियंत्रण मे आनेवाली नही है । एक तरफ दुनिया के कई देश आतंकवाद को खत्म करने के लिए एक साथ हुए है तो दूसरी और पाकिस्तान जैसे कई देश आतंकवाद को बढावा देने का काम भी कर रहे है । जिसके कारण आतंकवाद जल्दी से खत्म नही हो सकता ।

आतंकवाद का यह अजगर हमारे देश मे भी अपनी पकड मजबूत करने की लगातार कोशिशे करता है । हमारे देश की चारो

कवर स्टोरी...

- [illegible]

दिशा मे बैठे हुए देश हमारे साथ कभी भी धोखाधडी कर सकते है । इस लिए चारो ओर सरहद पर हमे चोकन्ना रहना पडता है । हमारे देश की सेना को धन्यवाद है जो रात दिन चोबीसो घन्टे अति दुर्गम स्थानो मे भी हमारे देश की सुरक्षा के लिए हंमेशा चोकन्ने रहकर अपनी मातृभूमी के लिए फर्ज अदा कर रहे है ।

हमारे देश की इन्टेलिजन्स ब्रान्च ने जम्मु और कश्मीर में गुप्त गतिविधि जानने के लिए बिछाई गई जाल को और फैलाया है और आतंकवादीओ को ढेर करने के लिए अपना फंदा और मजबूत किया है । कुपवाडा क्षेत्र में अपनी फर्ज अदा कर रहे हमारे सेना के जवानो पर खतरा ज्यादा रहता है क्योंकि यहाँ के स्थानिक नागरीको में से कई ऐसे नागरीक है जो पाकिस्तान के कब्जे मे रहे हुए कश्मीर के विस्तार में आना-जाना करते रहते है । कुपवाडा के विस्तारो में कई बार ऐसा बनता है की हमारे जवानो और आतंकवादीयो का आमना-सामना हो जाता है तब अचानक नजदीक के ग्रामीण इलाके से लोग वहाँ आ जाते है और भारत के विरुध्ध सूत्रोच्चार करने लगते है । और उससे भी आगे बात करे तो वो लोग मिल्ट्री केम्प के सामने प्रदर्शन कर के आतंकवादीयो के मृतदेह वापिस सोंपने के लिए धमाल मचाते है । यहां बहती किशनगंगा नदी के दोनो किनारो की पहाडीयाँ और घने वृक्षो के बीच छुपकर हमला

करने के लिए आतंकवादीयों को आसानी होती है । थोडे समय पहले कुपवाडा के एक नीच विस्तार हन्दवारा में सेना ने अलबद्र जूथ के चार आतंकीयों को गिरफ्तार किया था । कुल सात आतंकवादी थे लेकिन तीन वहाँ से भाग जाने में सफल हुए । यह अलबद्र आतंकी जूथ की रचना पाकिस्तान की मशहुर संस्था आइ.अेस.आइ ने १९९८ में की थी । अलबद्र संगठन का मुख्य उद्देश या कार्य स्थानिक कश्मीरी युवको को राष्ट्रविरोधी प्रवृतियों के लिए उकसाना है ।

यह आतंकवादी जूथ को हिझबूल मुजाहिदीन की ओर से अस्त्र शस्त्र और पैसे मिलते थे । भारत और अमेरीका ने अलबद्र को आतंकवादी संगठन घोषित कीया है । हाल में उसका गठबंधन लश्कर-ए-तोयबा और अलकायदा के साथ बना हुआ है । अलबद्र और लश्कर-ए -तोयबा यह दोनो जूथ ऐसे है जो कश्मीर में सिर्फ आत्मघाती युवको को अपने जूथ में सामिल करते है । इसके बावजूद भी भारतीय सेना ने अभी तक करीबन २०० से उपर आतंकवादीयों को जिन्दा गिरफ्तार कीया है और इतने ही आतंकवादीयो को घटना स्थल पर ही मार गिराया है ।

पिछले कुछ समय से अलबद्र संगठन ने कश्मीरी युवको को अपने संगठन में सामिल करना शुरू कीया है । अलबद्र के कमान्डर शातिर दिमाग के होते है और वो कश्मीर की आज़ादी के सूत्रोच्चार करते हुए कश्मीरी युवको में से किसे अपने संगठन में शामिल करना है वो अपने तर्जुबे से पहचान लेते है । बाद में ऐसे युवको के साथ वो संबंध रखते है और धीरे धीरे कर के उसको भारत के विरुध्ध प्रवृति करने के लिए मानसिक तौर पे तैयार कर के अपने संगठन में शामिल करते है । थोडे समय पहले ही इन्टेलिजन्स ब्रान्च ने श्रीनगर के एक सेना अधिकारी को इस बात से अवगत किया था की अलबद्र के एक समूह ने कुपवाडा में कुछ प्रवृतीयाँ शुरू की है ।

हाल ही में अलबद्र संगठन की ताकत बहुत ही बढ गई है इसका कारण हे पाकिस्तान के जासूस और अलकायदा यह दोनो की ओर से आर्थिक तौर पे उसको बहुत ही मदद मिल रही थी ।

मिडीया में ऐसी खबर लगातार प्रसारीत हो रही है की सिरीया के इराकी सरहद पर लड़ते लड़ते इस्लामीक स्टेट (आइ.अेस.आइ.अेस.) नाम की कुख्यात आतंकी संगठन की कमर टूट गई है । इसके अलावा आइ.अेस के लीडर अबु बकर अल बगदादी फिर से भुर्गभ में चला गया है । आइ.अेस के लीडर अबु बकर अल बगदादी को मौत की निंद में सुलाने के लिए अमेरीका ने अपने खुफिया कमान्डो को कडक आदेश दिए है । दूसरी ओर से भारत के लिए चिंता की बात यह है की ओसामा बिन लादेन ने जिस अलकायदा नाम की आतंकी संगठन जूथ का संगठन किया था वो फिर से ताकतवर बन रहा है । क्योंकि अब अलकायदा के निशाने पे भारत है । संयुक्त राष्ट्रसंघ के एक एहवाल के मुताबिक अब "अलकायदा इन इन्डीयन सबकोन्टीनेन्ट " नाम से नया आतंकी जूथ बनाया है यह जूथ के जरिए वो लोग चाहते है की भारतीय उपखंड में नए आतंकवादी हमले बोलकर तबाही मचाई जाए ।

एक खबर ऐसी भी है कि चीनी गुप्तचर इस जूथ की मदद कर रहे है । यह लोग यह नए जूथ को खुफीया सेटेलाइट डेटा उपलब्ध कर के उसकी मदद करते है । वैसे भी चीन ने अपने देश की गतिविधीयों पर नजर रखने के लिए आसमान में विशेष प्रकार के सेटेलाइट लगाए है । संयुक्त राष्ट्रसंघ की एक उच्च स्तर की समिति है जिसका एक मात्र कार्य है की अलकायदा की प्रवृतियों पर नजर रखना । इस समिति के बावीसवें एहवाल में स्पष्ट दर्शाया गया है कि भारत पर हमला बोलना अलकायदा का सैद्धांतिक संकल्प है । अगर यह बाते भारत गंभीरता से नही लेगा तो उसे बहुत बड़ी दुर्घटना का सामना करना पडता है और बड़ी मात्रा में जानहानि का संकट बना रहेगा । वैसे भी दक्षीण एशिया में अलकायदा सालो से कार्यरत है । अफघानिस्तान के कई प्रदेशो में अलकायदा के खूंखार आतंकी प्रवृतियाँ द्वारा हिंसा फैला रखी है । एक महीने पहले ही कश्मीर पुलिस ने एक अरफान हुसैन वानी नाम के शख्स की गिरफ्तारी की है जो सीधा अलकायदा से जुड़ा हुआ है । २०१७ के डिसम्बर में अलकायदा ने कश्मीर में एक विडीयो क्लिप जारी की थी जिस में जेहाद के लिए खुल्ला निमंत्रण दिया गया था । जब पूरी दुनिया का ध्यान इस्लामीक स्टेट पर था तब यह पिछले तीन-चार सालो में अलकायदा ने नवेम्बर से फिर से अपनी गतिविधियाँ तेज कर दी है और अपने नए आक्रमक तेवर का निमार्ण किया है । संयुत राष्ट्रसंघ की

मान्यता के मुताबिक अलकायदा ने अब संपुर्ण हाईटेक प्रणालीयाँ अपना ली है और अब उसके आतंकवादीयों के पास नाइट विझन केमरा और गाइडेड ड्रोन हमले की टेक्नोलोजी भी है । अलकायदा के जरिए अभी भारत और बांगलादेश के सूमसाम इलाके के युवानो को अपने आतंकी जूथ में सामेल किए गए थे । कश्मीर के अलबद्र संगठन के अलकायदा के साथ संबंध नए नही है । पिछले दो-तीन साल से अलबद्र के लिए अलकायदा एक पेरेन्टेड संस्था जैसी जिम्मेदारी निभा रही है । अलबद्र के कमान्डर ने अपना मुख्य मथक पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर और पख्तुनो के बीच रखा है । किन्तु कुपवाडा और श्रीनगर के आसपास बहुत बड़ी संख्या में उसके 'फोल्डरो ' की मौजुदगी है ।

अभी अलकायदा की कमान अयमान अल जवाहिरी नाम के कमान्डर के हाथ में है । यह जवाहिरी वैसे तो मूलभूत रूप से इजिप्त का एक डॉक्टर है । एक खबर के मुताबिक उसकी उम्र करीबन ६० साल की आसपास की है । पिछले एक दशक से जवाहिरी अमेरीका के डर से घूमता फिर रहा है । वो ओसामा बिन लादेन का सबसे निकटतम साथीदार रहा है । अमेरीका और उसके सहयोगी देशो को धमकी देने वाले जो विडीयो पहले अलकायदा ने अल जझीरा समैत कई चेनलो पर प्रसारीत कीया था उसमें आवाझ यही जवाहिरी की ही थी । अलकायदा के पास ऐसा ही एक और खतरनाक कमान्डर है – खालिद शेख, लेकिन अभी वो क्युबा की जेल में बंद है और वहाँ से

अयमान अल जवाहिरी

नीकलने के लिए वो बहुत ही उत्पात मचा रहा है ।

अयमान अल जवाहिरी ने भारत में जातिवादी हिंसाचार फैले और अति महत्व के आंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त स्थलो पर विनाशक हमला हुए उस के लिए योजना बनाई है । इसलिए उसने भारतीय उपद्विप में आतंक फैलाने के लिए एक अलग आतंकी जूथ का गठन किया है । जो अलकायदा का ही एक हिस्सा है जो भारत के लिए बहुत चिन्ता की बाबत है । अलबद्र का एक कमान्डर आफरीन है जो पाकिस्तान के कब्जे वाले विस्तारो में जेहादी और आतंकवादी शिबिरे चला रहा है । यह आफरीन कश्मीर के भौगोलिक परिस्थितियों से बराबर परिचित है । भारतीय खुफिया एजन्सी का मानना है की आफरीन अभी अलकायदा के सीधे संपर्क में है । अलकायदा के कमान्डर जवाहिरी को चीन और पाकिस्तान के खुफीया एजन्सी से विभीन्न तरह की मदद मिलने से अब वो अपने नए आतंकी हमले की योजनाये बना रहा है और ऐसे हमले करने के लिए सही मौके के इन्तझार में बेठा है ।

वैसे तो संयुक्त राष्ट्रसंघ के एहवाल में यह भी दर्शाया गया और बताया गया है की पिछले समय की तुलना में भारत की सुरक्षातंत्र मे सुधार आया है और वो ज्यादा ताकतवर बन गया है । फिर भी कश्मीर में अभी भी अलकायदा को चाहिए इतना राष्ट्रविरोधी और आत्मघातीयो मिलने की पूरी संभावना है ।

भारत सरकार को अभी इसके बारे में ज्यादा चोक्कने रहने और एक खास प्रकार के आयोजन करके ऐसे आतंकी जूथो को नियंत्रण में लाने के लिए और जोर लगाना पडेगा । ❖

मुंबई के नए पुलिस कमिश्नर IPS सुबोधकुमार जयस्वाल

सिनियर आइ.पी.एस. ओफिसर सुबोधकुमार जयस्वाल ने थोडे समय पहले ही मुंबई के नए पुलिस कमिश्नर के तौर पे चार्ज संभाला है । सुबोधकुमार जयस्वाल ने यह चार्ज मुंबई के टोप टेन ओफिसर्स में गिने जाते IPS दता पडसालगीरकर के पास से संभाला है । IPS पडसालगीरकर को डायरेक्टर जनरल ओफ पुलिस, महाराष्ट्र के पद के लिए चुना गया है क्योंकि यह पद के ओफिसर निवृत होने वाले थे ।

जयस्वाल की उम्र ५५ साल है और वो १९८५ के बेच के IPS ओफिसर है । उन्हो ने रीसर्च एन्ड एनालिसिस वींग (RAW) में काम

महाराष्ट्र पुलिस स्पेश्यल...
– मोहन परमार (मुंबई)

किया हुआ है । यह नए पुलिस कमिश्नर के पद से पहले उन्हो नें केन्द्र में केबिनेट सेक्रेटरी के एडीश्नल सेक्रेटरी के पद पर अपनी जिम्मेवारी संभाल रहे थे । धी इन्डीयन एक्सप्रेस के एहवाल के मुताबिक महाराष्ट्र सरकार ने सुबोधकुमार जयस्वाल को पुछा था की क्या वो वापिस महाराष्ट्र आना चाहते है? गत समय में यह आइ.पी.एस. ओफिसर ने मुंबई पुलिस मे जिम्मेवारी संभाली थी और उसके अलावा उन्हो ने महाराष्ट्र एन्टी टेररीस्ट स्कवोड में भी काम किया था । सुबोधकुमार जयस्वाल ने २०,००० करोड़ के नकली स्टेम्प पेपर कांड में चीफ ओफ स्पेश्यल इन्वेस्टीगेशन टीम के तौर पे काम किया था । शुरुआत से अंत तक यह कांड मे उन्हो ने अपनी जिम्मेवारी बखूबी और इमानदारी से निभाई थी और मुंबई के कई उच्च लेवल के पुलिस ओफिसर और यह नकली स्टेम्पपेपर कांड के आरोपीयो के बीच के संबंधो को उजागर किया था । २००६ में एन्टी टेरीझम स्कवोड के डेप्युटी इन्स्पेक्टर जनरल (DIG) के पद पर जिम्मेवारी निभाते हुए उन्हो ने मालेगांव ब्लास्ट केस में बारीकी से

जांच की थी ।

हमारे जानकार सुत्रो के मुताबिक सुबोधकुमार जयस्वाल थोडे समय के लिए ही मुंबई के पुलिस कमिश्नर पद पर बने रहेंगे । महाराष्ट्र सरकार ऐसा भी निर्णय ले सकती है कि थोड़े समय के बाद IPS दता पडसालगीरकर की निवृति के बाद खाली पड़ने वाले डायरेकटर जनरल ओफ पुलिस के पद पर सुबोधकुमार जयस्वाल को नियुक्त कर सकती है । हालाकी सुप्रीम कोर्ट के थोड़े समय पहले आए फैसले के अनुसार DGP के पद पर ओफिसर का नियुक्ति करने के बाद कम से कम २ साल तक उनको उसी पद पर रहेना पड़ेगा यह चुकादा अगर कोई ओफिसर का निवृति काल का समय हो तो भी उसे असर कर्ता रहेगा । अगर ऐसा होता है तो जयस्वाल को DGP के पद पर प्रमोशन देकर बिठाया नही जा सकता ।

आगे तो समय ही बताएगा की क्या हो सकता है ।

हमारे "क्राइम फोर्स" परिवार की ओर से **IPS ओफिसर सुबोधकुमार जयस्वाल को उनके नए पद मुंबई पुलिस कमिशनर के लिए बेस्ट ओफ लक ।**

जय हिन्द... ❖

हमारे जानकार सुत्रो के मुताबिक सुबोधकुमार जयस्वाल थोड़े समय के लिए ही मुंबई के पुलिस कमिश्नर पद पर बने रहेंगे । महाराष्ट्र सरकार ऐसा भी निर्णय ले सकती है कि थोडे समय के बाद IPS दता पडसालगीरकर की निवृति के बाद खाली पड़ने वाले डायरेकटर जनरल ओफ पुलिस के पद पर सुबोधकुमार जयस्वाल को नियुक्त कर सकती है । हालाकी सुप्रीम कोर्ट के थोड़े समय पहले आए फैसले के अनुसार DGP के पद पर ओफिसर का नियुक्ति करने के बाद कम से कम २ साल तक उनको उसी पद पर रहेना पड़ेगा यह चुकादा अगर कोई ओफिसर का निवृति काल का समय हो तो भी उसे असर कर्ता रहेगा । अगर ऐसा होता है तो जयस्वाल को DGP के पद पर प्रमोशन देकर बिठाया नही जा सकता ।

कड़ी मेहनत और निष्ठा से अपने लक्ष्य की प्राप्ति करने वाले गुजरात के निष्ठावान IPS ओफिसर :

बलराम मीणा

गुजरात पुलिस स्पेश्यल...
- विजय साणथरा

दोस्तो हमने कई बार पढा और सुना है कि कठोर परिश्रम का कोइ विकल्प नही है । हर इन्सान को अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए निष्ठा से कड़ी मेहतन करनी चाहिए । हमारे धर्मग्रंथ गीता में भी कहा गया है कि इन्सान को फल की अपेक्षा रखे बिना अपने कर्मो को निष्ठा से करते रहना चाहिए । बिना फल की अपेक्षा रखने वाला और कड़ी मेहनत और संघर्ष करने वाला इन्सान को कभी निराश नही होना पडता । उसको उसकी मेहनत का फल एक दिन अवश्य ही मिलता है । अगर हम हमारे आसपास और समाज में रहने वाले लोगो पर नजर डालेंगे तो ऐसे इन्सान भी हमे नजर आएंगे जिसने अपनी कड़ी मेहनत और निष्ठा से अपना लक्ष्य प्राप्त किया है । आज हम यहाँ ऐसे ही एक इन्सान, IPS ओफिसर बलराम मीणा साहब की बात करने वाले है जिसने पूरी निष्ठा के साथ कड़ी मेहनत और संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य की प्राप्ति की है । बलराम मीणा साहब हाल में राजकोट रुरल एस.पी. का पदभार संभाल रहे है और अपनी जिम्मेवारी पूरी निष्ठा और निडरता के साथ बखूबी निभा रहे है ।

बलराम मीणा का जन्म दिनांक ०१/०७/१९८० के दिन राजस्थान के झलावाड के भवानी मंडी गाँव में हुआ था । उनके पिताजी का नाम नारायणलाल मीणा और माताजी का नाम कंचनबाई मीणा हैं । कमनशीबी से बाल्यावस्था में ही उनके पिताजी नारायणलाल मीणा का देहांतवास हो गया था । उनके घर की आर्थिक स्थिति बेहद सामान्य थी और उस में भी पिताजी का देहांतवास होने से और खराब हो गई थी । लेकिन ऐसी कठीन परिस्थिति में भी माता कंचनबाई ने गजब की हिंमत बनाए रखी और पूरे घर की जिम्मेवारी उनके पर आने के बाद भी अपनी हिंमत बरकरार रखी । अब माता कंचनबाई को माता-पिता दोनो का फर्ज निभाना था जो उन्हो ने बखूबी निभाया । बलराम के पालन-पोषण में कोई कमी न आए इसलिए माता कंचनबाई ने रात-दिन एक कर के

कड़ी मेहनत और संघर्ष करते हुए अपने बेटे बलराम को भवानी मंडी के सरकारी स्कुल में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए दाखिल किया क्योंकि परिवार की आर्थिक स्थितियाँ इतनी भी अच्छी नही थी कि वो अपने बेटे को खानगी स्कुल में शिक्षा प्राप्त करने के लिए दाखिला दिलवा सके । बलराम मीणा ने अपनी कोलेज तक की शिक्षा भवानी मंडी के सरकारी स्कुल में ही प्राप्त की ।

कोलेज की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्हो ने पोस्ट ग्रेज्युअेशन राजस्थान के कोटा शहर से किया । बलराम मीणा साहब ने बताया की उनकी यह सफलता में उनकी माता कंचनबाइ का बड़ा ही योगदान है ।

पोस्ट ग्रेज्युएशन करने के बाद साल २००६ में उनको वेस्ट बेंगाल के बोलपुर में जुनियर हिन्दी ट्रान्सलेटर के पद पर नियुकत किया गया । बाद में जुलाई–२००७ में उनका तबादला दिल्ही हो गया और वहाँ पर भी उनको केन्द्रीय सचिवालय में विधि और न्यायमंत्रालय में जुनियर हिन्दी ट्रान्सलेटर के ही पद पर नियुकत किया गया । यहाँ भी वो अपने लक्ष्य की पूर्ति की ओर बढने के लिए चूपचाप नही बेठे और कड़ी मेहनत करते रहे । साल २०१० में राजस्थान में प्रशासनिक सेवा आयोग की परीक्षा में उतीर्ण हो कर उन्हो ने जयपुर में तालीम ली । उन्हो ने साल २०११ में UPSC की परीक्षा दी और उस में उतीर्ण हुए । बलराम मीणा २०१२ के IPS बेच के ओफिसर है । IPS बनने के बाद उन्हो ने २०१३–१४ साल के दौरान हैदराबाद में तालीम प्राप्त की ।

सप्टेम्बर २०१४ से लेकर मार्च २०१६ तक मीणा साहब ने वलसाड में ASP का कार्यभार संभाला । मार्च २०१६ के बाद उनको प्रमोशन मीला और उन्हे अहमदाबाद शहर में DCP के पद पर नियुक्त किया गया । साल २०१७ में उनका तबादला राजकोट में DCP झोन १ के पद पर किया गया । अभी बलराम मीणा साहब राजकोट के रुरल एस.पी. के पद पर कार्यभार संभालते हुए अपनी जिम्मेवारी पूरी निष्ठा के साथ बखूबी निभा रहे है ।

अपने कार्यकाल के समय दरम्यान मीणा साहब ने कई प्रशंसनीय कार्यवाही की है । जब वो साल २०१६ में अहमदाबाद शहर में DCP के तौर पे जिम्मेवारी निभा रहे थे तब उन्हो ने अहमदाबाद के पुलिस कमिश्नर अे.के.सिंघ साहब के मार्गदर्शन में कमान्डीग कन्ट्रोल रुम की स्थापना करने के लिए कड़ी मेहनत की थी । साल २०१७ में राजकोट के DCP झोन १ के पद पर रहते हुए चाइल्ड लेबर कानून के जरिए सख्त कार्यवाही करते हुए उन्हो ने ११० बच्चो को बाल मजदूरी की चंगुल से मुक्त करवाया था । यह ११० बच्चो में से अधिकतम बच्चे गुजरात राज्य के बहार के राज्यो के थे । जिसे सलामत रुप से वापिस अपने घर परिवार को सौंप दिया था । हाल में ही पूरे गुजरात राज्य में बहुचर्चित मुंगफली कौभांड मे भी मीणा साहब ने सराहनीय कार्यवाही करके इस कौभांड मे शामिल कई राजकीय ताकत रखने वाले लोगों को किसी के भी दबाव में न आते हुए कानून की ताकत का परीचय दे कर अपनी निष्ठा और नीडरता का परिचय दीया है ।

आप अपने कार्य में निष्ठा से लगे रहो । लोग आपके कार्यो की नोंध ले या न ले, उसकी परवा मत करो । आपकी कड़ी मेहनत का फल आपको एक दिन अवश्य ही मिलेगा ।

– बलराम मीणा

(राजकोट रुरल एस.पी.)

गुजरात के ऐसे नीडर और निष्ठावान IPS ओफिसर बलराम मीणा साहब को "क्राइमफोर्स" परिवार का बेस्ट ओफ लक ।

जय हिन्द... ❖

क्या एक देश एक चुनाव संभव है...?

२०१९ के लोकसभा चुनाव भारतीय राजनीति में बेहद महत्वपुर्ण बनने वाले है, क्योंकि उसके साथ देश के सब से ताकतवर राजकीय दल के अस्तित्व का सवाल जुड़ा हुआ है । करीबन अधिकतम प्रदेशो में कोंग्रेस के हाथ से सत्ता छीन गई है । २०१९ में भाजपा और नरेन्द्र मोदी को चूनावो में जीत हांसील हो सकती है तो २०१४ में बेहद बुरी तरह से हारने वाली कोंग्रेस पार्टी को एक तो प्रादेशीक राज्योमें मुँह की खानी पडी है और उपर से लोकसभा के चुनाव में दूसरा पराजय उसके अस्तित्व को ही खत्म कर देगा ।

इस चुनाव कैसे किया जाए उसके बारे में चर्चा बढती जा रही है । चुनावो में अपने दल को मिली हार के बारे में अपने दल से क्या कमी रह गई और हम क्युँ हार गए उसके

चुनाव विषयक...
- शैलेष परसाणा

आत्ममंथन करने के बदले में ऐसे पराजीत दल वाले चुनाव के इलेकट्रीकल मशीन पर ऊंगली करके उसको पराजय का कारण बता रहे है । ऐसे मशीनो में कोई गड़बड़ी नही हो सकती ऐसा बार बार साबित करने के बाद भी पराजीत दल के नेताओ लोगो के मन में जहर घोल रहे है EVM मशीन को लगातार गलत ठेहराने की कोशिषे कर रहे है । अगर सत्ताधारी दल के इशारे में गड़बड़ी फैल सकती है तो फिर पंजाब, बिहार, गोवा और मणिपुर में भाजपा को कम वोट और कम बेठक कैसे मिली? इसके अलावा कर्णाटक में भाजपा बहुमत बेठक जितने में क्यों सफल नही हुइ? कोई भी तटस्थ व्यकित यह स्वीकार नही कर सकती है की जब बिन भाजपा दल जीते तो EVM सही तरीके से काम कर रहे है और जब भाजपा का विजय होता है तब EVM मशीन में गड़बड़ी हो सकती है । राजकीय दलो के शोरबकोर से चुनाव में मातबर खर्च मे कटौती और समय में भी करकसर करने वाले मशीन की छुट्टी करने का कोई सही कारण नहीं है । पहले के समय में जैसे मत पत्रको के चुनाव करने का आग्रह शिवसेना और मायावती करती है लेकिन उस में उन लोगो की समजदारी से ज्यादा अपना निजी स्वार्थ दिखाई पडता है ।

नरेन्द्र मोदी मानते है की लोकसभा और राज्यो के चुनावो की अवधी पांच साल की हे तो दोनो का चुनाव एक साथ होना चाहिए । मोदी की ऐसी बाते मिडीया में बहुत

उछली है । कोई उसके पक्ष में बोलता है तो कोई उनके विरूध्ध में बोलते है । चुनाव आयोग और बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार मोदी की यह बात को बिन व्यवहारू मानते है ।

अमित शाह मानते है कि लोकसभा और बारह राज्यो के चुनाव एक साथ हो सकते है । लेकिन ऐसी भी चर्चा हो रही हे की लोकसभा और राज्यो के चुनाव एक साथ करने की बातो में नरेन्द्र मोदी की ही कोई चाल है । तो दूसरी ओर इस साल के अंत मे राजस्थान, मध्यप्रदेश, छतीशगढ, मिझोरम के चुनाव होने वाले है यह सब विधानसभा और लोकसभा के जल्दी से बरखास्त कर के सभी चुनावो साथ करने की चुनौती राहुल गांधी ने दी है ।

यह सब शोरगुल में हम कुछ पुराने अनुभवो को भूल जाते है । हमारे देश में कोंग्रेस का एकचक्री शासन (१९५१ से १९६७) था तब लोकसभा और करीबन सभी राज्यो के चुनाव एक समय पे एक साथ ही हुआ करते थे । भारत के पहले चार चुनाव (१९५१-५२, १९५७, १०६२, १९६७) इस तरीके से ही किए गये थे । १९६७ के चुनाव में कोंग्रेस का आठ राज्यो के चुनाव में पराजय हुआ था और संयुक्त विद्यायक दलो की सरकार बनी । लेकिन यह सरकारे ज्यादा समय चल न सकी और चुनाव करने पड़े थे । इन्दीरा गांधी ने लोकसभा को समय से पहले (१९७१) में बर्खास्त कर दी । सत्र की अवधी बढा दी और (१९७७) में चुनाव का आयोजन कीया १९८० के साल में चुनाव का समय पत्रक बदल गया ।

प्रमुखशाही लोकतंत्र मे सभी धारासभ्यो का कार्यकाल निश्चित होने की वजह से अमेरीका में एक साथ चुनाव होते है । लेकिन संसदीय लोकतंत्र मे संसद और विधानसभा के कार्यकाल अनिश्चित होने से एक साथ चुनाव का आयोजन संभव नही है । हमारी पहली तीन लोकसभायें पांच साल चली, चौथी लोकसभा चार साल चली, पांचवी लोकसभा छः साल बाद बरखास्त हुइ । छट्ठी लोकसभा सिर्फ ढाई साल में खत्म हो गई । सातवी पांच साल चली (१९८४-८९), आंठवी लोकसभा में देढ साल में दो सरकारे बदली (१९९१), नवमी पांच साल चली (१९९१-९६), उसके बाद लोकसभा में दो साल में तीन सरकारे बदल गई (१९९८), बाजपाई को एक साल में जाना पडा । लेकिन १९९९ से २००४ तक भाजपा की मोरचा सरकार टीकी रही । २००४ के बाद से आजतक की सभी लोकसभा ने पांच साल पूरे कीए है ।

प्रादेशीक राज्यो का अनुभव भी कुछ ऐसा ही है । भारत में एक साथ चुनाव की बाते करना मतलब शेखचल्ली को भी शर्म आए ऐसी कल्पना । लेकिन एक साथ चुनाव के बारे में एक हकीकत यह भी है जो आमतौर पे उजागर नही होता । ऐसा सिर्फ अपने देश में ही होता है । चुनाव की तारीख का एलान होने से नतीजा आने तक आचारसंहिता का पालन करना होता है । और ऐसे देढ-दो महीने के समय में सरकार विकास का कोई भी कार्य नही कर शकती है । ऐसी आचारसंहिता और देश के विकास को अवरोध करने वाली प्रथा कोई भी लोकतंत्र में नही है । विकास कार्य के एलान होने से लोगो के मतदान पर असर होगी और शासनकर्ता पक्ष के पल्ले में वोट ज्यादा जा सकते है ऐसी दलीले निरर्थक है । हमारे मतदार बहुत ही समजदार है और वो लोग अपना मत चुनाव के एलान के पहले ही बना लेते है । और हमारे यहाँ के मतदाता इतने समजदार है की वो समजते है की ऐसी सरकारी योजनाओ का एलान मतलब लोगो को मूर्ख बनाना । इसलिए वो लोग ऐसे कोई सरकारी योजनाओ का एलान होने के बाद भी उसके झांसे में नही आते ।

ऐसी आंचारसहिता से विकास के कार्यो करीबन दो महीने तक रुक जाते है और उसको फिर से चालु होने में बहोत वक्त निकल जाता है । कोई विकास कार्यो तो फिर से चालु होते भी नही । चुनाव आयोग की यह गलतफहमी के चलते वहिवटी व्यवस्थातंत्र में गड़बड़ी फैलती है ।

चुनाव आयोग की यह कमी के बारे में कोई भी राजकीय नेता बोलते नही है क्योंकि चुनाव आयोग की यह कमीयाँ-खामीयाँ बताने से वो नाराज हो जाएगा और चुनाव आयोग की ऐसी नाराजगी कोई भी दल के नेता लेना नही चाहता है । लेकिन आम जनता को तो यह जानना चाहिए ।

लेकिन चुनाव आयोग का मानना है की जब तक कानूनी रूप से पूरा काम संभव हो सकता है तब ही लोकसभा और विधानसभा के चुनाव एक साथ हो सकते है । लेकिन अभी एक साथ चुनाव, नो चान्स । ❖

महाराष्ट्र सरकार का मास्टर स्ट्रोक

मुंबई और थाणे के २० लाख परिवारो को कम दाम पे धान या डीबीटी स्कीम के जरिए रोकड़ सब्सिडी का विकल्प ।

प्रशंसनीय...
– असित सोनी (मुंबई)

गरीब परीवारो को रेशनीग की दुकानो से कम दाम में धान खरीदने की जगह पर उनके बेन्क खाते में धान की सब्सिडी की राशि रोकड़ में जमा करने की प्रसंशनीय पहल महाराष्ट्र सरकार ने की है ।

महाराष्ट्र में धान की सब्सिडी के लिए "डायरेकट बेनिफिट ट्रान्सफर " (डी.बी.टी.) योजना का पिछले महीने प्रायोगीक तरीके से मुंबई और थाणे में अमलीकरण किया गया है । मुंबई और थाणे के करीबन २० लाख गरीब परिवारो को इसका लाभ मिलेगा । ऐसा भी जानने को मिला है कि पहले तबक्के में यह योजना के अंर्तगत गेंहु और चावल उपलब्ध होंगे । चीनी और मीट्टी का तेल इस योजना में नही आते ।

इस योजना के अंर्तगत लाभकर्ताओ को जाहेर बिक्री अंकुश संचालक को इसके विकल्प के बारे में बताना होगा कि उसको रेशनीग की दुकान के कम दाम में धान चाहिए के उसके बदले मिलने वाले रोकड़ राशि उसके बेंक खाते में जमा करना चाहता है । अगर कोई लाभार्थी रोकड़ राशि का विकल्प पसंद करेगा तो उनको धान के सरकार द्वारा निश्चित किए गए खरीदने के दाम का १.२५ गुना राशि मिलेगी । उदाहरण के तौर पे अगर धान का निश्चित किया गया दाम क्विन्टल के १७०० रूपए हे तो लाभार्थी ३५ कीलो धान के लिए हक्कदार हो तो उसके बेंक खाते में मास के रूपए ७५० जमा होंगे ।

सरकार के इस निर्णय को मार्केट में बहुत सराहा गया है । लोगो की लंबे समय की मेहनत रंग लाई है । मुंबई और थागे में इस योजना का अमलीकरण हो गया है और लोगों को आशा है की नजदीक के आने वाले समय में पूरे महाराष्ट्र में यह योजना शुरू हो जाएगी ।

लाभार्थी को ३५ किलोग्राम धान या तो रोकड़ सहाय के विकल्प की नोंध रेशनिंग के दुकानदार के पास रहेगी और उसके विकल्प के अनुसार ही लाभ मिलेगा । सरकार

के यह निर्णय से स्थानिक धान की बजार के थोकबंध और छूटक बिक्री में बढ़ोतरी होगी । अनाज की देखरेख की जंजट से सरकार को मुक्ति मिलेगी और गरीब इन्सान उसे मिलने वाली रोकड़ राशि से अपने पसंद के धान की खरीदारी कर सकेगा । इस योजना से स्थानिक बजार, जो मोल और मल्टिनेशनल कंपनीयाँ के सामने बाजार में टीकने के लिए लड़ रही है उसको ओक्सीजन मिलेगा ।

अगर यह योजना को सफलता मिलेगी तो एफसीआइ के गोदामो में करोडो रूपए के सड रहे गेंहू और चावल के सड़ जाने की खबरे भूतकाल बन जाएगी । और मुक्त व्यापार की दुनिया के लिए महाराष्ट्र सरकार ने लिया हुआ यह निर्णय सराहनीय है ।

महाराष्ट्र सरकार की यह सराहनीय योजना को सफलता मिलने के बाद पूरे हिन्दुस्तान के हर एक राज्य में यह योजना की अमलवारी करनी चाहिए । क्योंकि इस की अमलवारी से हमारे रेशनिंग मे रहे अबजो रूपए का भ्रष्टाचार खत्म होगा, सरकार द्वारा धान की देखरेख और उसको संभालने का करोड़ो रूपए का खर्च होता है उस से मुक्ति मिलेगी और यह बची हुई राशि दूसरे विकासलक्षी कार्यों में लगा सकते है

DBT Bharat

Direct Benefit Transfer

- रेशनिंग मे होता भ्रष्टाचार होगा बंध ।
- धान के लिए डायरेकट बेनिफिट ट्रान्सफर योजना को मार्केट में बड़ी मात्रा में स्वीकार ।
- मोल और मल्टीनेशनल कंपनी के सामने टीके रहने के लिए स्थानिक बाजार को मिलेगा ओक्सीजन ।

और इस तरह देश के विकास में बढ़ोतरी हो सकती है । हम बार बार अखबारो में समाचार पढ़ते है की इस राज्य में सरकारी गोदामो में इतना टन/क्विन्टल धान सड़ गया, उस राज्य में सरकारी गोदामो में रहे धान बारीश में भीग गये और बेकार हो गए ऐसी घटनाओ पर इस योजना से पूर्णविराम लगेगा । और हमारे देश के किशानो ने जि-तोड मेहनत से उगाये गए धान की बरबादी नहि होगी । ❖

ई – सिगरेट का सेवन याने हार्ट एटेक को "Come Soon"

लाल बत्ती...

– ब्रिजेश उदेशी

परंपरागत रूप से धुम्रपान करने के साथ ई–सिगरेट का सेवन करने से हार्ट एटेक का खतरा पांच गुना बढ जाता है । लेकिन एक अध्ययन के मुताबिक सिर्फ ई–सिगरेट का सेवन करने से हार्ट एटेक का खतरा दो गुना ज्यादा बढ जाता है । अमेरीकन जर्नल में प्रकाशीत हुए एक अहेवाल में दर्शाया गया हे कि ई–सिगरेट का सेवन और हार्ट एटेक के बिच सीधा संबंध है ।

ई–सिगरेट के सेवन करने वालो में ज्यादातर लोग ऐसे होते हे जो सिगरेट का सेवन करना छोडते नही है । लोगों का मानना है की सिगरेट की जगह पे ई–सिगरेट का सेवन करने से वो हार्ट एटेक का खतरा कम कर रहे है । लेकिन यह बात सच नही हे । यह बात तो एकदम सच है की सिगरेट और ई–सिगरेट यह दोनो का साथ में सेवन करना मतलब अपने स्वास्थ्य के लिए खतरे में एकदम से बढावा देना । ऐसे सेवन से हृदय के लिए खतरा बहुत ही बढ जाता है । संशोधन मे ऐसा भी दर्शाया गया है की धुम्रपान का सेवन छोड़ते ही हृदय पर से खतरा कम हो जाता है ।

संशोधक ने सिगरेट या ई–सिगरेट का सेवन करने वाले ६९,४५२ लोगो को अपने अध्ययन में शामिल किया था और उन को पुछा गया था कि " क्या आप के डोकटरने कभी आप को हार्ट एटेक आया है ऐसा पुछा था ?"

हाल के समय में और गत समय में भी ई–सिगरेट का सेवन करने वाले ९३५२ मे से ३३३ याने के ३.६ % लोगो ने कोई भी एक समय पे हार्ट एटेक का अनुभव किया था और हर रोज ई–सिगरेट का सेवन करने वाले ६ % लोगो ने ऐसा अनुभव किया था ।

अप्रत्यक्ष धुम्रपान से बच्चे फेफड़ो की खतरनाक बिमारी के शिकार हो सकते है ।

अमेरीकन केन्सर सोसायटी के अध्ययन से यह साबित हुआ है की धुम्रपान करने वाले लोग धुम्रपान न करने वाले लोगों की जिंदगी को विशेषरूप से खतरे में डालते है । यह अध्ययन के नतीजो के मुताबिक दूसरो ने किए धुम्रपान से उठने वाले धुआँ के संसर्ग मे आते है तब उनको कोनिक ओब्स्ट्रीव पल्मनरी डिसीझ (COPD) के जरिए मौत का खतरा बढ जाता है ।

अध्ययन में यह भी दर्शाया गया है की लगातार धुम्रपान करने वाले लोगो के साथ रहने वाले बच्चो में (COPD) की बिमारी से मौत की संभावना ३१ % बढ जाती है । पुख्त आयु के लोगो में अप्रत्यक्ष धुम्रपान के कारण कोई भी बिमारी की संभावना ९ %, हार्ट डीझीस से मौत की संभावना २७ % और स्ट्रोक से मौत की संभावना २३ % और COPD से मौत की संभावना में ४२ % की बढोतरी हुई है । संसोधको ने कभी भी धुम्रपान न किया हो ऐसी ५४ से ७४ वर्ष की उम्र के ७०,९०० लोगो का २२ साल तक अवलोकन किया था धुम्रपान करने वाले एक लाख लोगो में से सात से ज्यादा व्यकितयों की मौत के आंकडे के साथ (COPD) के जरिए मौत की बढोतरी का संबंध है । ❖

ऐसे हुई CBI की स्थापना..!

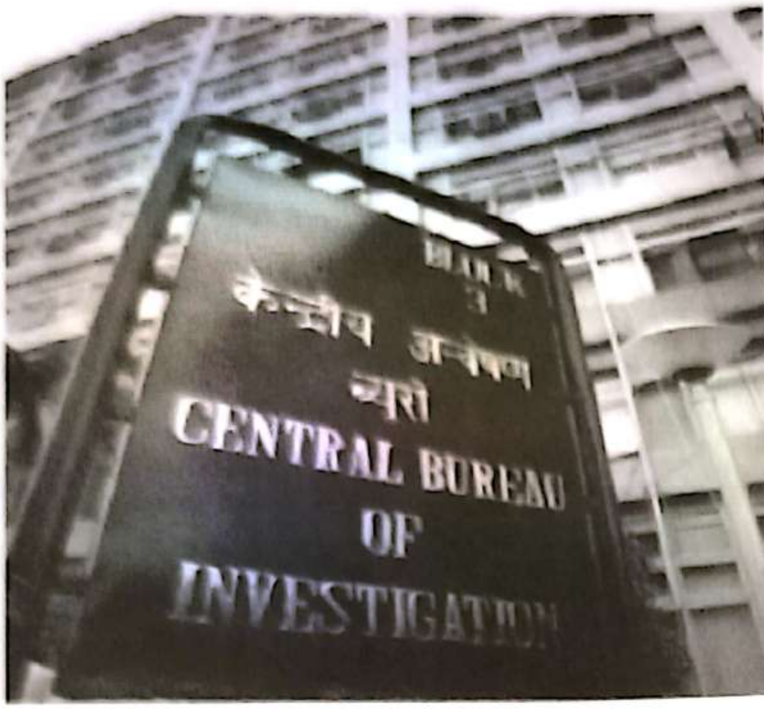

संस्था परिचय...

- गोपाल कापडीया

दुनिया के सब देश अपने अपने देश की सलामती और शांति चाहते है । इसलिए सब देशो ने अपने देश की सलामती के लिए अपना अपना सैन्य रखा है । जैसे वो अपने दुश्मनो से अपने देश की रक्षा के लिए सेना तो होती है लेकिन देश के अंदर भी देश के दुश्मन मौजूद है मतलब की देश की आंतरीक सुरक्षा भी इतनी ही अनिवार्य है जैसे सरहदो की सुरक्षा । और ऐसे देश के गद्दारो को खोजना बड़ी मेहनत और मुश्केल कार्य है । इसलिए हर एक देश ने अपनी अपनी खुद की खुफिया एजन्सीया बनाई है । ऐसी खुफिया एजन्सीयो के कार्य देश के बाहर और देश के अंदर छुपे हुए ऐसे देशद्रोहीयों को ढुंढके उन को कड़ी सजा दिलाना है ।

अलग अलग देशो की अपनी खुद की खुफीया काम कर रही है जैसे कि पाकिस्तान की इन्टर सर्विसीझ इन्टेलीजन्स(ISI), ओस्ट्रेलियाकी ओस्ट्रेलियन सीक्रेट ईन्टेलीजन्स सर्विसीझ(ASIS), भारत की रीसर्च एन्ड अेनालिसिझ विन्ग(RAW), फ्रान्स की डायरेकटोरेट जनरल ओफ एकसपर्ट सिक्योरीटीझ(DGES), रशिया की धी फेडरल सिक्युरीटी सर्विसीझ(FSD), जर्मनी की धी बुंडेसेन ग्रीक टांडेन्स(BND), चीन की मीनीस्ट्री ओफ स्टेट सिक्योरीटीझ(MSS), ईझरायेल की मोशाद, यु.के. की MI-6, अमेरीका की CIA.

हमारे देश की एक और संस्था है जो देश के अंदर फैले हुए भ्रष्टाचार को नियंत्रण करने और खत्म करने जैसे कार्य करती है। जो सेन्ट्रल ब्युरो ओफ ईन्वेस्टीगेशन (CBI) के नाम से जानी जाती है।

सी.बी.आई. की स्थापना कैसे हुई?

१९३९ की साल में अंग्रेजो ने सी.बी.आई. की स्थापना करने का सोचा था । वो समय दुसरे विश्व युध्ध का था । युध्ध के दरमियान

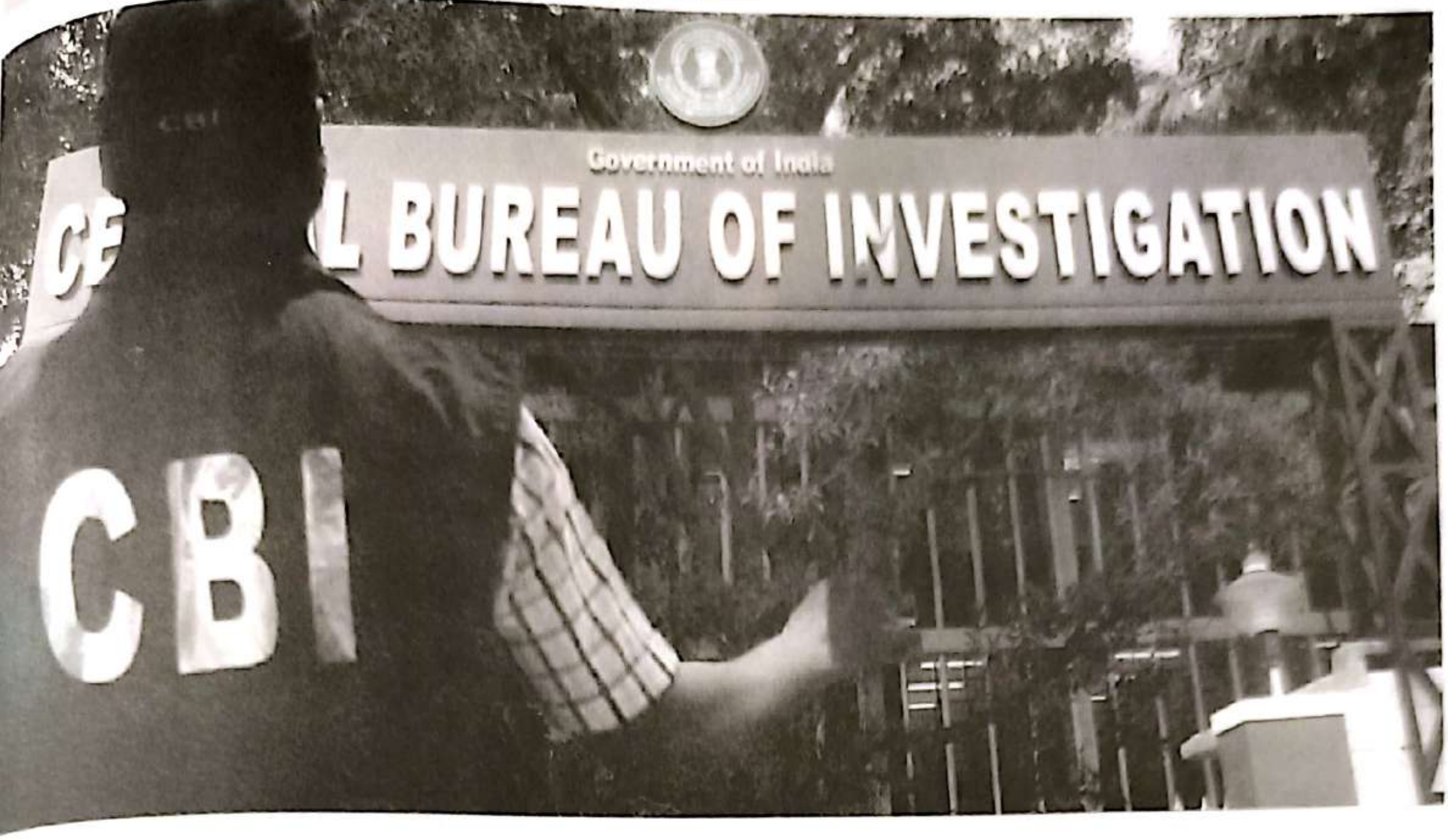

और उसके बाद में होने वाले भ्रष्टाचार को नियंत्रण मे लेने के लिए सी.बी.आई. की अनिवार्यता साबित हुई थी । ऐसा भी नही था की ब्रिटीशर्स आर्थिक अपराधी या भ्रष्टाचारी को खत्म करने का इरादा रखते थे । उस समय पे यह गुनाह शोधक संस्था दिल्ही में थी और खास प्रकार के अपराधो में राज्य को अपराधीयों की शोध के लिए मदद करती थी ।

उसके बाद में दिल्ही में १९९६ में दिल्ही स्पेश्यल पुलिस अेक्ट की रचना की गई और अप्रैल , १९६३ को इस धारा के अधीन एक वहीवटी हुक्म से सेन्ट्रल ब्युरो ओफ इन्वेस्टीगेशन की रचना की गई । सी.बी.आई. के सबसे पहले

स्व. डी. पी. कोहली

डायरेकटर डी. पी. कोहली थे । उनको काम तो उसकी मुख्य संस्था दिल्ही पुलिस के अंडर ही करना था । सिंगल डिरेक्टीव से पहेचाना जाता हुक्म के मुताबिक कोइ भी राज्य में राज्य की सरकारी अनुमति के बिना सरकार के अधिकारीयों के खिलाफ जांच करने का अधिकार सी.बी.आई. को नही था । आयकर विभाग, कस्टम विभाग और रेल्वे विभाग ऐसे विभाग है जिसके अधिकारी पूरे भारत में कहीं ना कही जिम्मेवारी निभा रहे है । ऐसे अधिकारीयों के खिलाफ जब शिकायते आती है और सी.बी.आई. जांच की अनिवार्यता होती है तब राज्य सरकार की अनुमति मांगनी पडती है । और यह राज्यो पर निर्भर करता है कि ऐसी जांच सी.बी.आई. को सोंपनी है की नही । सी.बी.आई. के सफलता और निष्फलता के लिए यह सिंगल डिरेक्टीव बहुत बड़ा अवरोध फेक्टर साबित होता है । ❖

हमे भूख क्युँ लगती है ?

आरोग्य विषयक...

- डो. राजेश राम

हम आदत से मजबूर होकर दिन में दो टाइम खाना खाते है । दिन में एक दो टाइम नास्ता भी करते है । हम ऐसा क्युँ करते है ? क्योंकि हमे भूख लगती है ।

लेकिन आपके मन मे कभी यह सवाल उठा है कि हमे भूख क्युँ लगती है ? भूख लगने के पिछे एक खास विज्ञान काम करता है ।

हमे भूख लगी है ऐसा संदेशा हमारा शरीर हमारे दिमाग को पहुंचाता है । ऐसे संदेशे का मतलब यह है की हमारे शरीर में पोषणयुक्त पदार्थों की मात्रा कम हो गई है और ऐसे पदार्थों की हमारे शरीर को जरूरत है । यह सब कैसे होता है वो जरा हम विस्तार से समजते है ।

हमारे शरीर में पोषक पदार्थों का लगातार रासायनिक परिवर्तन होता है । इस से हमारे शरीर के सभी पुरजो में लहू के द्वारा ताकत मिलती रहती है । यह एक रासायनिक प्रक्रिया है । इस से समतुला बनी रहे, यह शरीर को टीकाने के लिए जरूरी है । (ईस समतुला को अंग्रेजी मे मोटाबोलिक इक्वीलीब्रियम कहते है ।) इसका अर्थ यह है की ईंधन के रूप में लिए गए खुराक और उसके इस्तेमाल की समतुला बनी रहनी चाहिए और उसका सही तरीके से नियंत्रण भी होना चाहिए । यह नियंत्रण मे गड़बड़ी न हो जाए इसलिए प्यास और भूख लगते है ।

हमारे दिमाग में भूख का केन्द्र होता है । यह केन्द्र से ही हमारे आँत और पेट की प्रवृतियाँ पर "ब्रेक" लगती है । इसका मतलब यह हे कि जब हमारे लहू मे पूरक मात्रा में पोषक पदार्थ मोजूद होते हे तब दिमाग में स्थित यह भूख का केन्द्र पेट और आँत की प्रवृति को ब्रेक लगा देता है । लेकिन जब लहू में ऐसे पोषक पदार्थो के मात्रा मे कमी आ जाती है तब दिमाग मे स्थित भूख का केन्द्र पेट और आँत की यह प्रक्रिया फिर से शुरू कर देता है । इस कारण से ही जब हमें जोर से भूख लगती है तब हमारे पेट में से "गुड़-गुड़" आवाज़ आती है ।

फिर भी आपको यह जानने के बाद आश्चर्य होगा की खाली पेट के साथ भूख का कोई सीधा संबंध नही है । उदाहरण के तौर पे मानो के किसी व्यक्ति को तेज बुखार आया है और उसका पेट खाली है फिर भी उसको भूख नही लगेगी । उसकी भूख मर जाती है क्योंकि ऐसे समय

मे शरीर में संग्रहित प्रोटीन के अनामत मात्रा में से उसको पोषण मिलता रहेगा ।

भूख लगने से हमारे शरीर की ईंधन की जरूरीयात दिखाई पडती है । कोई भी इंधन विज्ञान कहता हे की जिस को जोरों से भूख लगी हो वो किसी भी प्रकार का खुराक खा लेता है । कभी ऐसे गंभीर हालात पैदा होते है की शाकाहारी इन्सान भी मांसाहारी खुराक खाने को मनबूर हो जाता है जीव विज्ञानी कहते है की जीवसृष्टी में सेक्स से ज्यादा पेट की भूख का महत्व है । लेकिन ऐसे कठोर हालात हमारे जीवन में रोज-बरोज पैदा नही होते इसलिए हम नई-नई वानगीयाँ खाने की मनोवृतियाँ रखते है । उदाहरण के तोर पे, कोइ आदमी खाना खाने को बेठेगा तब सूप लेगा और उसके बाद सब्जी, रोटी, दाल-चावल लेगा बाद में उसका पेट भर जाएगा तब फल या मिठाई लेगा । लेकिन इतना ही पोषण लेने के लिए सिर्फ आलु खाने से संतोष नही लेगा । कौन सा प्राणी कितने दिन खुराक के बिना चला सकता है वो निर्भर करता है उसके शरीर में चलती पोषक पदार्थ का लगातार रासायनिक परीवर्तन प्रक्रिया पर । गर्म लहू वाले प्राणीयो में यह प्रक्रिया तेजी से होती है । इसलिए वो अपना खुराक का जथ्था जल्दी से इस्तमाल कर लेता है । छोटे कद वाले और ज्यादा क्रिया शील रहेते प्राणी अपने खुराक का जथ्था जल्द ही खतम कर देते है ।

फिर भी आपको यह जानने के बाद आश्चर्य होगा की खाली पेट के साथ भूख का कोई सीधा संबंध नही है । उदाहरण के तौर पे मानो के किसी व्यकित को तेज बुखार आया है और उसका पेट खाली है फिर भी उसको भूख नही लगेगी । उसकी भूख मर जाती है क्योंकि ऐसे समय में शरीर में संग्रहित प्रोटीन के अनामत मात्रा में से उसको पोषण मिलता रहेगा । ❖

फिर भी आपको यह जानने के बाद आश्चर्य होगा की खाली पेट के साथ भूख का कोई सीधा संबंध नही है । उदाहरण के तौर पे मानो के किसी व्यकित को तेज बुखार आया है और उसका पेट खाली है फिर भी उसको भूख नही लगेगी । उसकी भूख मर जाती है क्योंकि ऐसे समय में शरीर में संग्रहित पोटीन के अनामत मात्रा में से उसको पोषण मिलता रहेगा ।

HUNGER
IS THE BEST SAUCE
IN THE WORLD

मुंबई के अंडरवर्ल्ड की खोफनाक बातें

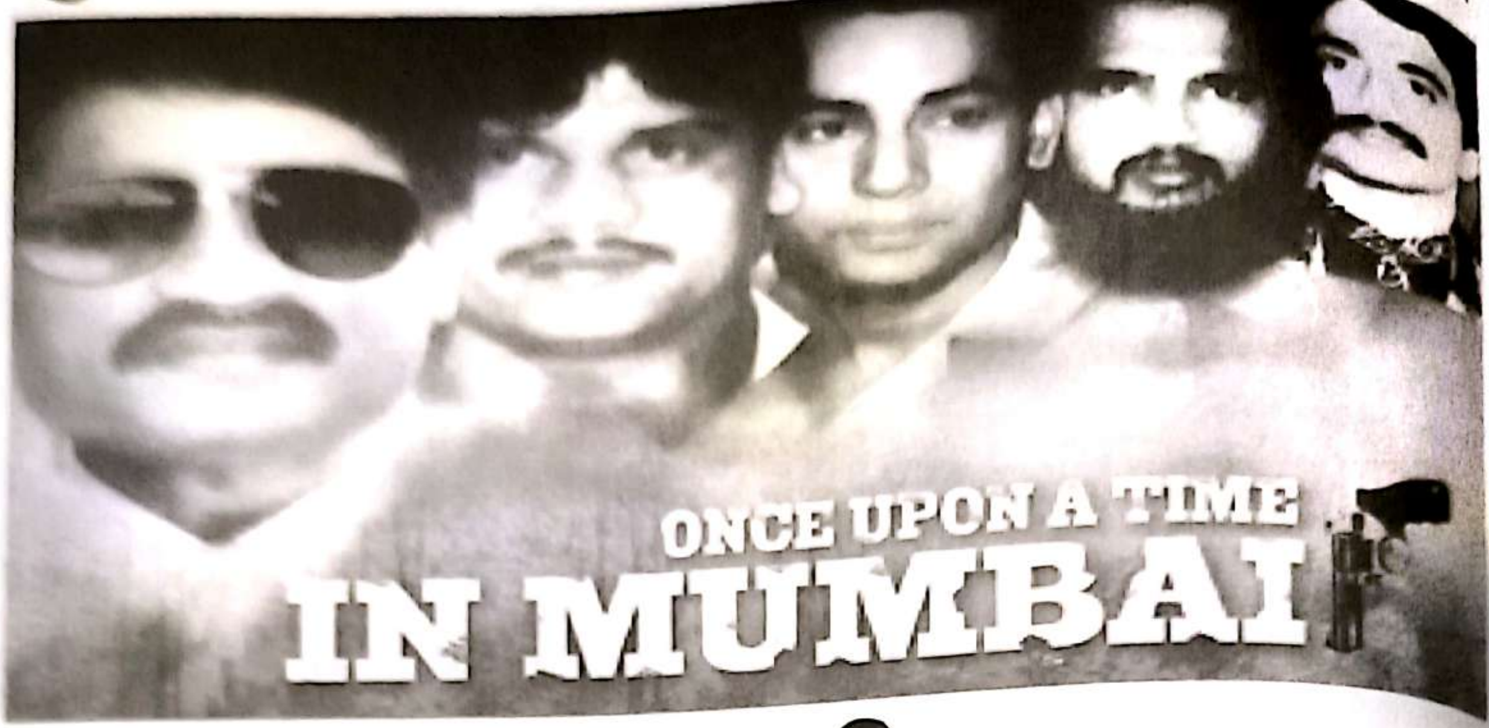

दोस्तो, आज हम बात करेंगे मुंबई के अंडरवर्ल्ड के कुख्यात माफिया और असली डोन बासु की...

तेली महोल्ले के सरकारी जे. जे. होस्पिटल के करीब घात लगाए बैठे तीन शख्स इतने खौफनाक लग रहे थे की वहाँ से गुजरने वाले राहगीर उन्हे देखते ही उनकी नजरो से बचकर सडक के उस पार हो जाते थे । खालिद पहलवान, रशिद पहलवान और लाल खान भारतीय मानको के मुताबिक विक्राल बदनवाले इन्सान थे । उन्होने "पहलवान " का यह खिताब अपने बोस के अखाडे में कड़ी मेहनत और कसरत करके हांसिल किया था । उनकी मशक्कत का पता उनकी भुजाओ की उन

मांसपेशीयाँ से चल जाता था जो उन भुजाओ की सख्त चमडी के नीचे उभरी हुई थी ।

जब वो अपनी मांसपेसीयाँ भांज रहे थे और दूसरे राहगीर वहाँ से दबे पांव भाग रहे थे तब चमचमाती हुइ एक मर्सीडीझ बेन्झ वहाँ दाखील हुई । उस समय में मर्सीडीझ बेन्झ कार कई असल माफिया सरगनाओ की आम सवारी के रूप में लोकप्रिय थी । ऐसे लगा जैसे तेली मोहल्ले का धूल भरा इलाका पल भर में बदल गया हो । सत्तर के दशक के शुरुआती दिनो में बम्बई की सडको पर बहुत थोडी सी मर्सीडीझ गाडीयाँ दोडती दिखाई देती थी । वे मुट्ठीभर लोगो को छोडकर बाकी के बूते से बाहर हुआ करती थी और अहमद खान उर्फ डोन या बाशुदादा उन मुट्ठीभर लोगो में से एक थे । वह ऐसी सिर्फ एक का नही बल्की प्रतिष्ठा की निशानी ऐसी दो गाडीयों का मालिक था ।

जब कार उसके ओफिस के करीब पहुंची तो बाशुदादा के छुट भैये सावधान की मुद्रा में खड़े हो गये । बाशु दादा को करीब से जानने वालो के मुताबिक वो अनपढ था और अपने दस्तखत भी नही कर सकता था । फिर भी वह सत्तर के

दशक में डोंगरी की अपनी जागीरदारी पर पूरी हुकुमत चलाता था ।

बाशु दादा पूरी बांह की शर्ट कभी नही पहनता था । उसे अपनी भुजाओ की मांसपेशीयो का प्रदर्शन करना पसंद था । वह जिन्स और टी-शर्ट पहने हुए कार से बाहर आया । वह बताना चाहता था की वह जितना शातिर है उतना ही मजबूत भी है ।

बाशु दादा अपने अनुचरो के करीब पहुँचा तो उसने उन्हे ललकारा "कैसे घटीया पहलवान हो तुम लोग सालो ? फिर वो गरजा... क्या तुम बिना रूके सौ दंड पेल सकते हो ?"

यह पहला मौका था जब बाशु दादा ने खालिद और रहीम की काबिलीयत पर ऐसी बेइज्जती के साथ सवाल उठाया और अब उन लोगो के पास अपने आप को साबित करने के अलावा कोई चारा नही था ।

रहीम ने चोट खाए दिल से कहा "बिलकूल ही मैं सो दंड लगा सकता हुं । बाशु दादा ने उसको बोला "चलो करो और खालिद की ओर देखते हुए कहा तुम भी उसके साथ शामिल हो जाओ ।"

तेली महोल्ले में थोडी सी हलचल मच गई और यह दो पहलवानो को कसरत करते हुए देखने के लिए वहाँ छोटी सी भीड जमा हो गई । अब दोनो ने अपने अपने मोर्चे संभाले । हथेलीयों को तना, पांव फैलाये और गिनती शुरू हो गई । एक... दो... तीन... चार... पांच...।

मांसपेशीयाँ के इस पर्व में बाशु दादा भी शामिल हो गये । और वहाँ जमा भीड़ में रोमांच फैल गया ।

बिसवे दंड मे तो रहीम और खालिद हांफने लगे लेकिन दूसरी और बाशु दादा खामोशी के साथ अपनी रफ्तार कायम कीए हुए थे, थकान के कोई लक्षण नही दिखाई दे रहे थे । जब उन्हो ने सत्तर के पार किया तो, जारी रखना और भी मुश्किल हो गया । हर संख्या पे रहीम का तो बहुत बुरा हाल हो गया वह खड़ा भी नही रह सकता था । खालिद ने निश्चय किया था की वह रहीम की तरह ढेर नही होगा और उसने किसी भी तरह से तीन और दंड लगाए । वो इतना करीब पहुंचकर हारना नही चाहता था । लेकिन उसका शरीर ने साथ छोड दीया, वो झूककर वापस उठ नही सकता था । उसके पूरे बदन से पसीना बह रहा था । उसका विशालकाय बदन थरथरा उठा ।

लेकिन अब बाशु दादा जमा हुई भीड़ का आकर्षण का केन्द्र बन गया था । वो अब नबे से आगे निकल गया था और सतक के रास्ते आगे बढ रहा था । उसकी रफ्तार जरा भी धीमी नही पडी थी । उसने अपना १०० का आंकडा पार किया । वहाँ इकट्ठे हुए लोगो का आश्चर्य तब बढ गया के वो १०० का आंकडा पार करने के बाद भी नही रूका । उसने ११० दंड पूरे कर दिए फिर भी वो नही रूका और उसने १२० दंड पेल दिए तो अब उसकी टी-शर्ट पसीने से लथपथ हो चूकी थी । वो अपने पैरो पर खड़ा हो गया और अपने दोनो बोडीगार्ड की और देखकर मुस्कुराने लगा । उसने खुद को साबित कर दिखाया था । वो कुछ नही बोला लेकिन उसने तीन ग्लास बादाम के शरबत लाने का हुक्कम दीया ।

पुराने जमाने में बादाम का शरबत कसरतीयो के बीच प्रिय हुआ करता था । खालिद और रहीम के लिए यह अपनी मेहनत का इनाम था ।

उतरप्रदेश के वे तीन लोगो ने अपना बदन कस कर बनाया था । उस मकान के अंदर जिम भी मौजूद था । इसके एक कमरे मे बड़े-बड़े आइने लगाये गए थे । पूरे कमरे में कसरत के विविध प्रकार के साधन पडे हुए थे ।

बाशु दादा का यह मुख्य अड्डा था । डोंगरी जैसे बिहड़ बस्ती वाले इलाके पर वो वहाँ से अपना राज चलाता था । अपने जमाने का बड़ा तस्कर बाशु सोने और चांदी के कारोबार में था ।

पुलिस भी बाशु दादा से बचकर रहती थी क्योंकि वो इस इलाके का बेहद ताकतवर डोन था । इतना ही नही परंतु पुलिस कई गुत्थीयां सुलझाने मे उसकी मदद भी लीया करती थी । जेबकतरो, साइकिल चोरो, हिंसक अपराधियों और जुए के गुप्त अड्डे चलाने वालो को पकडने के लिए शहर में बाशु के संपर्क से उन्हे मदद मिलती थी ।

बाशु दादा के मदद के पेंतरे बेकार नही जाते थे । जब कस्टम विभाग या डायरेक्टर ओफ रेवन्यु इन्टेलिजन्स उसे तस्करी के मामले में फँसा लेते तो डोंगरी पुलिस स्टेशन या येलो गेट पुलिस स्टेशन के पुलिस वाले खुद को उलझन की स्थिति में पाते थे ।

अपनी जान बचाने के लिए वे बाशु दादा के ठिकाने पे दिखावटी छापा मारते थे । पुलिस की जीप जे.जे. जंकशन स्थित अेन. यु. किताबघर के मोड पर जाकर खड़ी हो जाती थी । एक पुलिस अधिकारी महज एक कोन्स्टेबल को साथ लिए जीप में से उतरता और अपनी टोपी उतारता हुआ वह बाशु दादा की बेठक की और बढता । डोन पुलिस की मौजुदगी पर लगभग ध्यान दिए बिना अपनी बेठक से एक इंच भी नहीं हिलता । अधिकारी उन्हे सलाम करता और अगर उसे बेठने को कहा जाता तो कुर्सी पर बेठ जाता ।

डोन कभी कभी इन अधिकारीयो को बादाम का शरबत पिला देता था । कभी वो इन से कुछ सवाल पुछे बिना वहाँ से चले जाने को कहता । बम्बई की पुलिस भी जो हिन्दुस्तान की सबसे सख्त पुलिस मानी जाती थी बाशु के सामने भले गिड़गिड़ाते ना हो, लेकिन उसकी हां मे हां जरूर मिलाती थी । एक समय पर झोंपडी में रहने वाला बाशु दादा चकरादेने वाली उचाइ पर पहुंच चुका था ।

बाशु दादा आज़ादी के बाद के गरीबी और हताशा भरे सालो में बम्बई आया था ।

बमुश्कील किशोरावस्था तक पहुंचे इस लडके ने अपने दिन नल बाजार, खेतवाडी और ग्रान्ट रोड पर भोजन की तलाश में भटकते हुए बिताए थे । वह हालां कि साइकिल मेकेनीक का काम करते हुए और कबाड़ी की दुकान पर नौकर के रूप में काम कर के कुछ पैसे कमा लेता था । कम आमदनी की वजह से उसे आम तौर पे भुखा ही रहना पडता था । एक दिन जिन्दा बने रहने के लिए हताश कोशिष में बाशु ने शालीमार टोकीझ के बाहर एक मारवाडी व्यापारी का चमडे का बेग छीना और अपनी जान बचाकर भाग खड़ा हुआ । व्यापारी ने शोर मचाया तो भीड उसका पीछा करने लगी । नल बाजार चौराहे पर एक पुलिस कोन्स्टेबल ने उसे पकड लिया और बेग छीन लिआ, जो नोटो की गड्डीओ से भरा हुआ था ।

(क्रमशः)

लेकिन अब बाशु दादा जमा हुई भीड़ का आकर्षण का केन्द्र बन गया था । वो अब नबे से आगे निकल गया था और सतक के रास्ते आगे बढ रहा था । उसकी रफ्तार जरा भी धीमी नही पडी थी । उसने अपना १०० का आंकडा पार किया । वहाँ इकट्ठे हुए लोगो का आश्चर्य तब बढ गया के वो १०० का आंकडा पार करने के बाद भी नही रुका

AN ISO 9001 2008 CERTIFIED SHOWROOM

BIMAL™ TYRES

Delivering Satisfaction Since 1961

Authorised Dealer

APPOLLO - BRIDGESTONE - HANKOOK - J.K. - MAXXIS

GOODYEAR - DUNLOP - MACHELIN - CONTINENTAL - VREDESTEIN

SHOWROOM

Bimal House, Gondal Road, Nr. J K Hero Showroom,
Rajkot - 360002 (Guj) INDIA. Ph : +91 - 281 - 2231911, 2226442

ICH

ɔt A'bad Highway, Opp, Audi Showroom, Navagam,
ɔt - 360 003 (Guj) INDIA. Ph. : +91 - 281 - 2707878

www.bimaltyres.com | bimaltyres_rajkot@

નર્સિંગ કોર્ષ... નર્સિંગ કોર્ષ.... નર્સિંગ કોર્ષ....

ANGEL INSTITUTE

M.D. Mr. Justinbhai Christian
Mo. +91 98258 26886

Vedant Hospital, Near Jigar Pan, Sadar, Moti Tanki Chowk,
Rajkot - 360 001. Ph. : 0281 - 3205128. Mo. 98258 26886

AKHIL GUJARAT PARA MEDICAL COUNCIL

AN ISO - 9001 - 2008 CERTIFIED
Regd. by - Guj. Govt. Under S.R.Act & Govt. of India
Under T.M.Act 1999 (T.M. 1577408)
Regd. Under Sociery Reg. Act - 1860

૧૦૦% જોબ ગેરંટી

નર્સિંગ કોર્ષ

(૧) નર્સિંગ આસીસ્ટન્ટ	૧ વર્ષ
(૨) એડવાન્સ નર્સિંગ	૨ વર્ષ
(૩) D.M.L.T.	૧ વર્ષ
(૪) G.N.M. (BANGLORE)	3½ વર્ષ

NATIONAL DEVELOPMENT AGENCY
Promoted By Govt. of India

ધો.૧૦, ધો.૧૨ કે કોલજમાં અભ્યાસ કરતા કે લાયકાત ધરાવતા ભાઈઓ તથા બહેનો એડમીશન લઈ શકે છે...
એડમીશન માટે મળવાનો સમય
સવારે ૧૧-૦૦ થી સાંજે ૫-૦૦ સુધી.

થિઅરી : નિષ્ણાંતો (ડૉકટર) અને ક્વોલિફાઇડ ટ્યુટર દ્વારા શિક્ષણ
પ્રક્ટિકલ : મલ્ટી સ્પેશ્યાલીટી હોસ્પિટલ કે જેમાં યોગ્ય પ્રેક્ટિકલ નોલેજ પુરૂં પાડવામાં આવે છે.

નર્સિંગ કોર્ષ માટેની જરૂરી બાબતો :
(૧) ૬૦ બેઠકની હોસ્પિટલ હોવી જરૂરી તથા પેથોલોજી લેબોરેટરીની સુવિધા.
(૨) હવા-ઉજાસવાળા કલાસરૂમ અને બેસવાની વ્યવસ્થા ને અમારી પાસે ઉપલબ્ધ છે.
(૩) બહેનો માટે હોસ્ટેની સુવિધા ઉપલબ્ધ.

સૌરાષ્ટ્રમાં છેલ્લા ૧૫ વર્ષથી નર્સિંગ ક્ષેત્રે સેવા આપતી સરકાર માન્ય એકમાત્ર સંસ્થા...

મોરબી બ્રાંચ : જુના બસ સ્ટેશન પાસે, અયોધ્યાપુરી, મોરબી. મો. ૯૭૧૨૩ ૩૨૦૬૦

Harivandana College

Our Source of
Inspiration

H. H. HARIPRASAD SWAMIJI

RAISE YOUR CAREER WITH Essential Skills

Dr. Maheshbhai B. Chauhan
(Chairman)

Sarveshwarbhai B. Chauhan
(Campus Director)

OUR COURS

B.Com | BBA | BCA | B.Sc.(IT) | B.P.T
M.Com | B.Ed | PGDCA | MSW | M.Sc. (IT & CA) | M.Sc. (Chem.)

QUALIFIED FACULTY MEMBERS | MORE THAN 14,000 BOOKS IN LIBRARY | WELL EQUIPPED 6 SCIENCE LABORATORY

દિકરીઓને ફ્રી ટ્રાન્સપોર્ટેશન આપતી એકમાત્ર સંસ્થા

Near Saurashtra University, Munjka, Rajkot. | Phone : 0281 257 5594 | Cell : +91 99781 55555, 99794 0

Mo. 96623 89939

Great Location, Service & Stay.....

HOTEL DHANRAJ PALACE

TARIFF DETAILS

Room Type	Single	Double
Non A.C.	650/-	850/-
A.C.	950/-	1250/-
Royal Suite	2250/-	2650/-

eck Out Time 12 Noon
ra Person Rs. 200/-
As Applicable
iff Subject to Change

p. Khadi Bhavan, Trikon Baug, Dhebar Chowk,
ar Bapu's Bawla, Rajkot - 360 001. (Gujarat)
: (0281) 2241936 / 37, E-mail : hotel_dhanraj@yahoo.com

Best Wishes to
CRIME FORCE

Jaydev Raval

SAMSUNG INDIA

Authorised Service Center

SHREE VALLABH SERVICE

UL-24/25, Pramukh Swami Arcade, Dr. Yagnik Road,
Malaviya Chowk, Rajkot. Ph. : 0281 - 3295552
Only For Dealer : M. 70486 18686
E-mail : svsrajkot@gmail.com

If Undelivered, Please return to :
Raj Complex, Opp. Star Plaza,
Fulchhab Chowk,
Rajkot - 360 001.

To,
____
____
____
____